देवबन्दी अक़ाइद
का
तहक़ीक़ी जायज़ा
कुरआन व हदीस की रोशनी में
अज़
प्रोफेसर तालिबुर्रहमान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नबी सल्ल. के बतलाए तीन सबसे बेहतर जमानों के बाद भारत में इस्लाम उमूमन उन सूफ़िया के ज़रिये फैला जो हिन्दू जोग, वहदतुल वजूद और अहले हिन्द के अवतार तक के अकीदे से शऊरी या गैर शऊरी तौर पर मुतअस्सिर थे। यही वजह रही कि यहां इस्लाम और उसकी सही तालीमात हर दौर में गुरबत और अजनबियत का शिकार रहीं। "तुम उनको जो कब्रों में दफन हैं, नहीं सुना सकते।" (फ़ातिर – आयत –22) "जिसने अल्लाह के सिवा किसी और की कसम खाई उसने कुफ्र किया।" (तिर्मिज़ी) "सिर्फ अल्लाह तआला ही से फ़रियाद की जा सकती है, मुझ से नहीं।" () जैसी ठोस बुनियादी तालीमात पीठ के पीछे डाली जाती रहीं और अल्लाह ने सबसे पहले मेरा नूर पैदा किया। और ऐ मुहम्मद (सल्ल.)! अगर तुम ना होते तो मैं आसमानों को पैदा नहीं करता। जैसे मनघड़त अकवाल, रसूल सल्ल. के इल्मे गैब का अकीदा, तसव्वुरे शैख, वहदतुल वजूद, वहदतुश्शुहूद, हयाते अम्बिया और सालेहीन की कब्रों से वसीला जैसे बेबुनियाद और गैर इस्लामी ख्यालात में आम मुसलमान तो क्या इल्म व फ़िक्ह के दावेदार भी मुब्तिला हो गये। आप. सल्ल. की पेशगोई, इस्लाम अजनबीयत की हालत में शुरू हुआ है और दोबारा अजनबियत का शिकार हो जाएगा। सो मुबारकबाद हो (इस्लाम को अपनाने वाले अजनबीयों के लिए)"। (मुस्लिम – किताबुलईमान)

अपनी पूरी गहराई के साथ इस बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक पर सादिक आई। लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल रहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल. का यह इर्शाद "मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा ग़ालिब रहेगा, यहाँ तक कि अल्लाह का अम्र (कंयामत) आ जाए और वह गालिब ही रहें।" (बुखारी – 3640 –3641) के मिस्दाक़ हर दौर में, ख्वाह कम तादाद में ही सही अहले हक़, अहले तौहीद, सुन्नते सहीहा की पैरवी करने वाले और असहाबे इस्लाह व तजदीद का एक गिरोह ऐसा मौजूद रहा इस इल्म (किताब व

के साथ अहादीसे नबविया और उलूमे सूफिया दोनों को जमा करके एक खूबसूरत, असरदार और दिल नशीन मसलक ज़हूर में आ गया। (मसलक उलमा ए देवबन्द–पेज–5)

किताब में ग़ल्ती की इत्तेलाअ शुक्रिये के साथ कुबूल की जाएगी।

अबु उसामा

अपनों ही के हाथों ख़राब होते देखता है तो वह अपने जज़्बात पर काबू नहीं रखपाता। उसके मुंह से दर्दनाक चीख निकल जाती है और मजबूरन उसके लहजे में सख्ती और अन्दाज़े बयान में खुरदरापन आ जाता है।

इसके बावजूद हमें उम्मीद है कि क़ारिईन (पाठक) सही बात को समझ कर अपने अक़ीदे की इस्लाह करेंगे। लेखक, पब्लिशर और उन सब लोगों को अपनी दुआओं में याद रखेंगे जिन्होंने इस किताब को आप तक पहुचाने में तआवुन किया है।

इस्लाम की तरफ़ मन्सूब मुसलमानों की अक्सरियत जिस तरह शिर्क व बिदअत और गलत किस्म की आदात व रुसुम में जकड़ी है और इस्लाम की सही और असली शक्ल पर जितने मोटे पर्दे डाल दिये है, उन्हें देखकर एक अजनबी को इस्लाम की सच्चाई पर शक होने लगता है। ऐसे नाजुक हालात में एक मुखलिस मुसलमान का यह फर्ज़ हो जाता है कि वह अपनी सारी सलाहियतें खालिस इस्लाम की खिदमत पर कुर्बान कर दे।

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें अपने दीन की सही समझ अता करें और हमें अपनी तौफीक और मदद से नवाज़ें। ताकि हम दीने हक की नश्र व इशाअत की जिम्मेदारी पूरे इख़लास से निभा सकें। आमीन!

अब्दुल हमीद रहमानी

27 श्आबान 1407 हिजरी

बड़ी बुलन्द है) और 'अनल हक़' (मैं ही अल्लाह हूँ) कहा। यह सब वहदतुलवुजूद में से है। (शमाइमे इमदादिया–पेज–35) हाजी साहब आगे कहते हैं– "अल्लाह की मिसाल बीज की और मखलूक़ की मिसाल पेड़ की सी है कि पेड़ मय तमाम शांखों, पत्तों, फल व फूल के उसमे छुपा था। जब बीज ने अपने बातिन (छिपे हुए) को ज़ाहिर किया तोखुद छिप गया। जो कोई देखता है पेड़ को देखता हैं ओर बीज दिखाई नहीं देता।" (शमाइमे इमदादिया–पेज–38) हालांकि कुरआन कहता है "लम यलिद वलम यूलद" मगर हाजी साहब का कहना है कि अल्लाह (नऊजु बिल्लाह) कुत्ते, बिल्ली, चूहे, गधे, और घोड़े की शक्ल में ज़ाहिर हो रहा है। हाजी साहब आगे कहते हैं "जो अल्लाह के साथ बैठना चाहे उसे चाहिये की सूफिया के साथ बेठे।" इसका एक दूसरा मतलब यह कि जिसने मुझको देखा, उसने अल्लाह को देखा। और यह कि 'बेशक मैं तेरा रब हूँ। अपने जूते उतार दें। जो कोहे तूर पर आवाज़ आई थी। वह मूसा के बातिन (अन्दर) से आई थी। (शमाइमे इमदादिया–पेज–49, 59)

(b) अल्लामा मोहम्मद फ़ज़ल हक़ खैराबादी देवबल्न्दी लिखते है। अगर अम्बिया अलैहि. वहदतुल वुजूद की दावत देते तो उनकी रिसालत का फायेदा खत्म हो जाता। यह अकीदा आम लोगों की दिमागी समझ से ऊंचा है। इसलिए अम्बिया को हुक्म दिया गया कि वह लोगों की ज़हनी समझ को ध्यान में रख कर बात करें। (अलरोज़ अल मजूदाज़ खैराबादी–पेज–44) गौर कीजिए– अगर यह अकीदा वाकई अम्बिया अलैहि. पर उतरा था तो अम्बिया को चाहिए था कि वह इसे लोगों तक पहुंचाते। क्योंकि अल्लाह ने बड़ी सख्ती से ताकीद की थी कि ऐ रसूल सल्ल. पहुंचा दे जो तेरे रब की तरफ से तुझ पर नाज़िल किया गया है। अगर तूने यह काम ना किया तो तूने रिसालत को (उम्मत तक) नहीं पहुंचाया (माइदा आयत–67) और अल्लाह ने यह भी बता दिया कि यह हो नहीं सकता कि पैगम्बर खयानत करें। (आले इमरान आयत–161) इसी तरह आइशा रजि. ने फरमाया जो शख्स यह कहे कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने (वह्य में से) कुछ छिपा लिया है। वह अल्लाह के रसूल

सल्ल. पर इलज़ाम लगाता है। (बुखारी)

(c) अनवर शाह कश्मीरी जो देवबन्दियों के मशहूर आलिम गुज़रें है। एक हदीस की वज़ाहत करते हुए लिखते है– 'कुन्ता समी अल्लज़ी' का यह मआनी बताना कि बन्दे के कान, आंख बगैरह अल्लाह की हुक्म की ना फरमानी नहीं करते। इन अल्फ़ाज़ से दुश्मनी करना है इसलिए कि इस जुमले में दलील है कि नवाफिल के ज़रिये अल्लाह के करीब होने पर बन्दें में सिवाए जस्द व सूरत के कोई चीज़ बाकी ही ना रही। और उसमें अल्लाह ही सब करने वाला है। यही वह मआनी है जिसकों सूफिया किराम "फना फिल्ला" का नाम देते है। हदीस जिसका ज़िकर किया गया में वहदतुल वुजूद की तरफ चमकता हुआ इशारा है। हमारे मशायक शाह अब्दुल अजीज साहब के ज़माने तक इस मसअले में बड़े कट्टर थे लेकिन में ऐसा नहीं हूँ। (फैजुल बारी जिल्द–4 पेज–428)

(d) हज़रते ज़किरिया साहब लिखते है। एक खत जो शेखुल मशायक कुतुबुल इर्शाद हज़रत गंगोही साहब ने अपने पीर व मुरशद हाजी इमदादुल्लाह साहब की खिदमत में लिखा। वह मुकातिबे रशीदिया में भी छपा। लिखने को जी चाहता है। "पस ज्यादा अर्ज करना गुस्ताखी है या अल्लाह माफ फरमाना कि हज़रत के इर्शाद से तहरीर हुआ है। झूटा हूं, कुछ नहीं हूं। तेरा ही जिल्ल (साया, परछायी) है, तेरा ही वुजूद है। मैं क्या हूं?कुछ नहीं हूं और जो में हूं वह तू है। और में और तू खुद शिर्क दर शिर्क है। (फ़ज़ाइले सदकात पेज–556) (अस्तगफिरूल्लाह)

(e) अमीर खां साहब मौलाना गंगोही साहब से बयान करते है कि "सय्यद साहब की निसबत में जाते इलाही की तजल्ली (रोशनी) थी। (अरवाहे सलासा पेज–185)

(f) "कामिलीन में एक दर्जा हैं अबु अल–वक्त की वह जिस वक्त तजल्ली को चाहे अपने ऊपर वारिद करलें। अजब नहीं कि हज़रत शाह साहब ने उस वक्त अपने ऊपर जब्बार (अल्लाह) की तजल्ली को वारिद किया हो और उसकी मज़हरियत की हेसियत से उसको तवज्जों से दूर

कर दिया हो। (अरवाहे सलासा पेज–68)

(g) ज़करिया साहब मन्सूर हलाज के बारे में लिखते है। "दी गई मनसूर को फांसी अदब के तर्क पर था। अनल हक (में ही अल्लाह हूं) हक" मगर एक लफ़्ज़ गुस्ताखाना था।" (वली ए कामिल पेज–249) एक और जगह लिखतें है। "अल्लाह सुब्हानहु तआला जो हकीकत में हर जमाल व हुस्न का मम्बआ है और हकीकतन दुनिया में कोई भी जमाल उनके अलावा नहीं है। (तब्लीगी निसाब फ़ज़ाइले कुरआन पेज–300)

(h) इन्किशाफ कि देवबन्दी लेखक लिखते है– "कश्फे कुब्रा को कश्फे इलाही भी कहते है। यानि अल्लाह तआला का मुशाहेदा ओर मुआयना हो जाना और सभी पर्दो और एतबारात का उठ जाना और नूर की आंखों से खल्क को अल्लाह और अल्लाह को खल्क़ देखना। सालिक का चाहा हुआ असली कश्फ़ यही है। (इन्केशाफ सफा–36)3.

(i) नज़रिया वहदतुलवुजूद में डूबा हुआ एक वाकेआ पढ़ें "तज़किरतूर्रशीद" में पीर जी मोहम्मद ज़ाफर साहब साढोरी बयान करते हैं– एक रोज़ मौलाना खलील बअहमद साहब ने हज़रत (गंगोही) साहबसे पूछा कि हाफिज़ मैन्दू शैखपुरी कैसे शख्स थे। हज़रत ने फरमाया पक्का काफिर था और उसके बाद मुस्कुरा कर इर्शाद फरमाया कि ज़ामिन अली जलालाबादी तो तौहीद ही में गर्क थे। एक बार फरमाया कि – ज़ामिन अली जलाला बादी की सहारनपुर मे बहुत सी रण्डिया मुरीद थी। ऐक बार यह सहारनपुर में किसी रण्डी के मकाम पर ठहरे हुए थे। सब मुरीदनियां मियां साहब की ज़ियारत के लिए हाजिर हुई मगर एक रण्डी नहीं आई। मियां साहब ने पूछा कि फलां क्यूँ नहीं आई। रण्डियों ने जवाब दिया मियां साहब हमने उसे बहुत समझाया कि चल मियां साहब की ज़ियारत को तो उसने कहां कि में बहुत गुनाहगार हूं। मियां साहब को क्या मुंह दिखाऊं? मैं उनकी ज़ियारत के लायक नहीं। मियां साहब ने कहा नहीं जी । तुम उसे हमारे पास ज़रूर लाना। चुनांचे रण्डियाँ उसे ले आई। जब वह सामने आई तो मियां साहब ने पूछा

बी तुम क्यों नहीं आई थी?वह बोली हजरत अपनी रूह सियाही की वजह से ज़ियारत को आते हुए शर्म आती थी। मियां साहब ने कहा तुम क्यू शर्माती हो। करने वाला कौन है और करवाने वाला कौन। वह तो वही है। रण्डी यह सुन की आग बबूला हो गई और नाराज़ हो कर कहा लाहौला वलाकुव्वता अगरचे में रूहस्या और गुनहगार सही मगर ऐसे पीर के मुंह पर पैशाब भी नहीं करती। मियां साहब तो शर्मिन्दा हो कर रह गये। और वोह उठकर चल दी। (तजकिर्रतुर्रशीद जिल्द–2 पेज–242)

(हम अल्लाह से माफी चाहते है ऐसी कुफ्रिया खुराफात से)

ज़िन्दा बुजुर्गो की रूह से मदद लेना

मशहूर देवबन्दी आलिम अहसान गिलानी साहब लिखते है– "पस! बुजुर्गो की रूहों से मदद लेने का हम इन्कार नही करते।" (हाशिया सवानेह कासमी जिल्द पेज–332) मौलाना नजमुद्दीन साहब ने लिखा "उलेमा ए देवबन्द इस बात के भी कायल नहीं है कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी में या मरने के बाद सिरे से कोई तसर्रुफ नहीं कर सकता। (ज़लज़ला दर ज़लज़ला पेज–101)

मोलवी अशरफ अली थानवी साहब मोलवी निज़ामुद्दीन करानवी और वह मोलवी अब्दुल्लाह बराकी से रिवायत करते है कि एक निहायत मुअतबर शख्स वलायती ने बयान की कि मेरे एक दोस्त जो हाजी इमदादुल्ला मुहाजिर मक्की साहब से बेअत थे। खाना ए काबा के हज को तशरीफ ले जाते थे। बम्बई से जहाज में सवार हुए जहाज ने चलते–चलते टक्कर खाई। करीब था कि चक्कर खा कर गर्क हो जाए या दुबारा टकराकर टुकड़े–टुकड़े हो जाए। उन्होने जब देखा कि अब मरने के सिवा कोई चारा नहीं। मायूसी की हालत में घबराकर अपने पीर हाजी साहब रोशन ज़मीर की तरफ ख्याल किया और अर्ज की की इस वक्त से ज्यादा कौन सा वक्त मदद का होगा। अल्लाह सुनने देखने वाला है। उसी वक्त

जहाज ऊपर आ गया। और तमाम लोगों को निजात मिली। इधर तो यह किस्सा पेश आया। उधर अगले दिन हाजी साहब अपनें खादिम से बोले ज़रा मेरी कमर तो दबाओं। बहुत दर्द है। खादिम ने कमर दबाते दबाते कपड़ा जो ऊपर उठाया तो देखा कि कमर छिली हुई है। और कई जगहों से खाल उतर गई है। पूछा हज़रत यह क्या बात है? कमर कैसे छिल गई। फरमाया कुछ नहीं फिर पूछा तो आप खामोश रहै। तीसरी दफा पूछने पर फरमाया एक जहाज समन्दर में डुबा जाता था उसमें तुम्हारा दीनी और सिलसिले का भाई था। उसकी गिरिया व ज़ारी ने मुझे बेचैन कर दिया। जहाज को कमर का सहारा देकर ऊपर उठाया तब वह आगे चला और अल्लाह के बन्दों को निजात मिली उसी से छिल गई होगी। इसी वजह से दर्द है। मगर किसी से इसका जिक्र मत करना। (करामते इमदादिया पेज–36)

एक तालिबे इल्म कुदरत अली हाजी साहब की खिदमत में हाजिर था। उसने बयान किया कि बेशक फलां वक्त में हाजिर था। हाजी साहब हुजरे से बाहर तशरीफ लाये और अपनी भीगी हुई लुंगी मुझे दी और कहा कि इस कुऐं के पानी से धोकर साफ करलों। उस लुंगी को जब सूंघा तो उसमें दरिया की बूं और चिकना पन मालूम हुआ। (करामते इमदादिया–सफा–14)

मुश्रिकीने मक्का से आगे निकल जाना

इस एक मनघड़त किस्सें में हाजी साहब को हाजत रवा मुश्किल कुशा, हाजिर–नाजिर और आलीमुल गैब साबित किया गया है। मुरीद साहब भी गुमराही में मक्का के मुश्रिकों से आगे निकल गये है। इसलिए कि जब मुश्रिकीने मक्का किसी कश्ती में सवार होते और तूफान आने की वजह से जब उन्हें यकीन हो जाता कि वोह घेर लिये गये है। तो अल्लाह के लिए दीन को खालिस करते हुए उसी को पुकारते। (युनुस आयत–22) लेकिन यहां मुरीद साहब को जब लगा कि अब मरे तब मरे

तो इस मायूसाना हालत में बजाए अल्लाह के अपने पीर को मदद के लिए पुकारते हैं। जबकि इकरमा रजि. बिन अबि जहल के इस्लाम कुबूल करने की वजह भी ऐसा ही हादेसा हुआ था। "उन्होने जब देखा कि मुश्रिकीने मक्का तूफान में फंसने पर सिर्फ अल्लाह को पुकारते है। तो अहद किया कि अगर में इस मुसीबत से बच गया तो खुशकी (ज़मीन) पर अल्लाह ही को पुकारूंगा और फिर उन्होने ऐसा ही किया और इस्लाम ले आए। जबकि मुश्रिकीने मक्का की आदत यह थी कि जब वोह कश्ती मे सवार होते तो अल्लाह के लिए दीन को खालिस करते हुए उसी को पुकारते है और जब अल्लाह उन्हें खुशकी की तरफ निजात देता है तो फिर शिर्क करने लगते है। (अन्कबूत आयत–65) मुरीद मुसीबत में पीर साहब (गैरूल्लाह) को शायद इसलिए पुकारता है। क्योंकि थानवी साहब के बकोल हर इलाके में एक कुतुब होता है। और एक गौस फरियाद रस होता है। लेकिन कुछ ने कहा कि कुतुब अल अकताब को ही गौस कहते है। (तालीमुद्दीन पेज–120) मगर अल्लाह मुश्रिकीने मक्का से यह सवाल करता है "ऐ नबी! सल्ल.! इनसे पूछो कि तुम्हे ज़मीन पर और समन्दर के अन्धेरों से कौन छुटकारा देता है। और तुम उसी अल्लाह को गिड़गिड़ा कर पुकारते हो कि अगर हमें इस परेशानी से निजात मिल जाए तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुजार बन्दे बन जायेंगे। ऐ! नबी सल्ल.! इनसे कह दीजिए की अल्लाह ही तुम्हें इस मुसीबत से और परेशानी से निजात देता है, फिर भी तुम शिर्क करने लगते हो।" (अनआम आयत–63–64) अल्लाह का तो यह दावा है कि वही हर मुसीबत से निजात देता है। और मुरीद का यह अकीदा कि पीर साहब ही मदद करेंगे। एक जगह मक्का के मुश्रिकों से अल्लाह ने यूं ही खिताब किया कि "जब तुम्हें समुन्दर मे तकलीफ पहुचती है तो अल्लाह के सिवा जिन्हें तुम पुकारते हो, सब को भूल जाते हो। फिर जब वह तुम्हे ज़मीन तक पहुचा देता है तो तुम फिर अल्लाह के गैरो को पुकारने लगते हो। (इस्रा–आयत–67)

है नं अजीब बात! मुश्रिकीन तो समन्दर में सब भूल कर सिर्फ सिर्फ

अल्लाह को पुकारते थे और देवबन्दी मुरीद अल्लाह को छोड़कर पीर को मदद के लिए पुकार रहा है। उसकी नज़र में पीर ही मुश्किल कुशा व हाजतरवा है। तभी तो कहता है "इस वक्त से ज्यादा कौनसा वक्त इमदाद का होगा।" और अल्लाह बताता है "कौन है जो परेशान हाल की पुकार सुनता है और परेशानी को दूर करता है। (नम्ल–आयत–62) जबकि मुरीद जिन्हे पुकार रहा है। "वह तो इतना इख्तियार भी नहीं रखते कि तुम से मुसीबत को हटा दें या फेर दें।" (इस्रा–आयत–56) दूसरी तरफ पीर हाजी साहब है कि अकेले या हाफ़िज ज़ामिन साहब के साथ सहारनपुर इण्डिया में रहते हुए मुरीद की समन्दर की परेशानी जान ली। हज़ारों किलोमीटर दूर से उसकी पुकार सुन ली। आनन फानन में समन्दर में ठीक उसी जगह पहुँच गये जहां जहाज था। फिर कमर के सहारे इतने बड़े जहाज को डूबने से बचा लिया। इस तरह इस एक ही अफ़साने के ज़रिये हाजी साहब को आलिमुल गैब, हाज़िर–नाज़िर, हाजत रवा और मुश्किलकुशा सब कुछ बना दिया गया, मान लिया गया।

मुर्दा बुजुर्गो से मदद लेना

अहसन गिलानी साहब फरमाते हैं– "फौत हो चुके बुजुर्गो की रूहो से मदद लेने के बारे में उलमा ए देवबन्द का ख्याल भी वही है जो आम अहले सुन्नत वल जमाअत का है। खुद कुरआन ही में है कि अल्लाह तआला अपने बन्दों की इमदाद (सहायता) फ़रिश्तों से कराते है और सही अहादीस में है कि मेअराज की रात आप सल्ल. को मूसा अलैहि. से नमाज़ें कम करवाने में मदद मिली ओर दूसरे नबियों से मुलाकातें हुईं। तो इस तरह की पाक रूहो से किसी परेशान हाल मोमिन की मदद का काम कुदरत अगर ले तो कुरआन की किस आयत या हदीस से उसका रद्द होता है। (हाशिया–सवानेह कासमी–जिल्द -1 पेज–332) एक साहब इमाम ग़ज़ाली की किताब 'अहया अल उलूम' से कुछ हवाले जिक्र करके लिखते हैं– अब मज़कूरा बातों से आप बखूबी

यह नतीजा निकाल सकते है कि औलिया की रूहों को अल्लाह की तरफ से कितने ज्यादा इख्तियारात हासिल है।" (इन्किशाफ़–पेज–70) एक जगह लिखते है– औलिया अल्लाह की वलायत और उनकी करामत मरने के बाद भी बाकी और अल्लाह के हुक्म से जारी रहती है। इस बारे में इतना समझ लीजिए कि अल्लाह के हुक्म से औलिया की रूहें दुनियां में आ भी सकती हैं और अल्लाह के हुक्म से दूसरों की मदद भी कर सकती हैं।" (इन्किशाफ़–पेज–67) अखलाक़ हुसैन क़ासमी साहब फरमाते है– "मोमिन की रूह खासकर औलिया अल्लाह और सालेहीने उम्मत की रूहें जिस्म से जुदा हो जाने के बाद इस दुनियां में तसर्रुफ की ताकत रखती है और उनका तसर्रुफ कानूने इलाही के मुताबिक होता है।" (अहलुल्लाह की अज़मत देवबन्द की नज़र में) अशरफ़ अली थानवी साहब फरमाते है– "कोई रूह अपना जिस्म अपनी हालते ज़िन्दगी में छोड़कर दूसरे मुर्दे के बदन (जिस्म) में चली जाए तो यह बात रियाज़त से हासिल हो सकती है।" (तालिमुद्दीन–सफा–118) एक साहब यह वाकेआ जिक्र करते है– एक बरेलवी आलिम और एक देवबन्दी तालिबे इल्म के बीच मनाज़ेरा तय हुआ। तारीख व जगह सब का मसअला तय हो गया। वाइज़ मौलाना साहब लम्बा चौड़ा अमामा सर पर लपेटे हुए किताबों के ढेर के साथ पहुंचे। इधर यह गरीब, कमजोर देवबन्दी इमाम डरता–डरता अल्लाह–अल्लाह करता सामने आया। सुनने वाली बात यही है जो उस देवबन्दी इमाम ने बयान की– कहते थे कि बरेलवी मौलाना वाइज़ साहब के सामने में भी बैठ गया। अभी बात शुरू भी नहीं हुई थी कि अचानक मुझे महसूस हुआ कि एक अजनबी शख्स मेरे बाजु में आकर बैठ गया। फिर उस अजनबी ने मुझ से कहा कि बहस शुरू करो और डरना हरगिज़ नहीं। इससे मेरे दिल को बड़ी ताकत मिली। फिर मेरी ज़ुबान से बोल निकलने लगे और मैं खुद नहीं जानता था कि मैं क्या बोल रहा हूं। मेरी बातों का जवाब मौलाना साहब ने शुरू में तो दिया। लेकिन अभी सवाल जवाब का सिलसिला लम्बा भी न चला था कि क्या देखता हू। मौलान वाइज़ साहब उठ खड़े हुए। फिर मेरे कदमों पर गिर कर रोने लगे। कहने लगे कि मै नहीं जानता था आप इतने बड़े आलिम

हैं। अल्लाह के लिए मुझे माफ कीजिए। आपने जो कुछ कहा है वही सही है। लोग दम ब खुद थे कि क्या सोचकर आए थे और क्या देख रहे थे। इसके बाद वह अजनबी शख्सियत जो अचानक आई थी गायब हो गई। कस्बे के लोग जो पहले ही इस देवबन्दी इमाम (तालिबे इल्म) से अकीदत रखते थे कि नज़र में अब उनकी इज़्ज़त और बढ़ गई। शैखुल हिन्द फरमाते है कि मैंने उस देवबन्दी मनाज़िर से पूछा कि अचानक आकर फिर गायब हो जाने वाली शख्सियत का हुलिया कैसा था? जब वह हुलिया बता चुके तो मैंने उनसे कहा कि यह तो हज़रते उस्ताद (कासिम नानोतवी) रह० थे जो तुम्हारी मदद के लिए अल्लाह की तरफ़ से हाज़िर हुए थे। (सवानेह कासमी–जिल्द–1 पेज–331) अशरफ अली थानवी के परदादा फरीद साहब किसी बारात के साथ जा रहे थे कि डाकूओं ने आकर बारात पर हमला कर दिया। उन्होने अपने तीर कमान से डाकूओं पर तीर बरसाना शुरू कर दिये। अल अखीर यह मुकाबले में शहीद हो गये। शहादत के बाद एक अजीब घटना घटी– रात के वक्त अपने घर ज़िन्दा इन्सान की तरह आये और अपने घर वालों को मिठाई देते हुए बीवी से फरमाया कि अगर तुम किसी को नहीं बताओगी तो रोज़ आया करूंगा। लेकिन बीवी डरी कि घरवाले जब बच्चों को रोज़ मिठाई खाता देखेंगे तो पता नहीं क्या शक करेंगे।?इसलिए यह बात घरवालों को बतला दी । फिर आप तशरीफ नहीं लाए। (अशरफुस्सवानेह जिल्द1 पेज–15) अल्लाह तो उस शख्स का जिक्र करता है जिसे तब्लीगे दीन के जुर्म में शहीद कर दिया गया "कहा गया जन्नत में दाखिल हो जा तो कहने लगा ऐ काश! मेरी कौम जान लेती कि मेरे रब ने मुझे माफ कर दिया और मुझे इज्जत पाने वाले लोगों मे सें कर दिया। (यासीन–आयत–26–27) अगर उस शहीद को दुनिया में आने की इजाज़त मिलती तो यह बात न कहता। अल्लाह तो एक ओर शहीद की यह बात रद्द कर देता हैं जो कहता है कि अल्लाह ! मेरी रूह को मेरे जिस्म में लौटा दे ताकि में तेरे रास्ते मे जिहाद करूं। (अल हदीस) अल्लाह फरमाता है– "मुर्दा है, ज़िन्दा नहीं है और उनको तो यह भी मालूम नहीं कि उन्हें उठाया कब जायेगा।" (नहल–आयत–21) अल्लाह

तो फरमाता है कि– "वह मरने वाले की रूहों को रोक लेता है।" (अनआम–आयत–60 व जुमर–आयत–42) मगर इन देवबन्दी उलमा के नज़दीक रूह हर जगह आ जा सकती है। फैसला आप कीजिए अल्लाह सच्चा या मुल्ला?

मख़लूक़ से मुश्किल कुशाई

किताब 'इन्किशाफ़' के देवबन्दी लेखक 'इसलाहाते सूफिया' नामी किताब के हवाले से कहते है "यही लोग मुसनदे इर्शाद के वारिस होते हैं और इनसे मखलूक की हाजते पूरी होती हैं।" (इन्किशाफ़–पेज–250) अशरफ अली थानवी साहब लिखते है– "मैं कसम खाता हूं कि आपके पास (मज़ार शरीफ पर) कोई खस्ता हाल दुआ के लिए अर्ज करने को नहीं पहुंचा। मगर यह कि उसके हालात सही हो गये। (इस तरह कि बरज़खी ज़िन्दगी की वजह से आप सल्ल. ने सुनकर दुआ की और वह कामयाब हो गया।)" और न किसी पनाह लेने वाले ने घबरा कर आपके दरबार में पनाह ली मगर यह कि अमन व अमान के साथ वापिस हुआ।" (नशरूतय्यब–पेज–142) देवबन्दियों के पीर व मुरशद हाजी इमदादुल्लाह साहब अपने पीर मियां जी नूर मोहम्मद झुन्झानवी साहब की शान इस तरह बयान करते है–

तुम हो ऐ नूरे मोहम्मद खास महबूबे खुदा

हिन्द में हो नायब मुहम्मद मुस्तुफा

तुम मददगार मदद इमदाद को फिर खौफ क्या

इश्क़ की पर सुन कर बातें कांपते है दस्त व पा

ऐ शाहे नूर मुहम्मद वक्त है इमदाद का

आसरा दुनिया में है अज़ बस तुम्हारी ज़ात का

तुम सिवा औरो से कुछ नहीं इल्तेजा

बल्कि दिन महशर के भी जिस वक्त काज़ी हो खुदा
आप का दामन पकड़ कर यह कहूंगा बरमला
ऐ शाह नूर मोहम्मद वक्त़ है इमदाद का।

यह बात हाजी साहब को कैसे मालूम हो गई कि उनके पीर खास मेहबूबे खुदा हैं? जबकि अल्लाह के रसूल सल्ल. फरमाते है–"मैं नहीं जानता कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे (सहाबा के) साथ क्या सुलूक करेगा।" (बुखारी–1243) फिर जिस दिन यह हालत होगी कि फ़रिश्ते और जिब्रील अलैहि. सफ़ बांधे खड़े होंगे। रब जिसे इजाज़त देगा वही बात करेगा और वह भी सही–सही।"(नबा–आयत–38) उस वक्त हाजी साहब की मदद उनके पीर करेंगे?अल्लाह फरमाता है– "जब बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे वोह लोग जिनकी पैरवी की जाती है उन लोगों से जो पेरवी करते है। वोह अज़ाब देख लेंगे उनके सारे ज़राय काट दिये जायेंगे।" (बकरा–आयत–166) ऐसे लोगों से अल्लाह फरमायेगा "तुम मेरे पास अकेले आ गये हो जैसा कि मैंने तुम्हे पहली बार पैदा किया था। जो कुछ हमने तुम्हे दिया उसको अपनी पीठों के करीब छोड़ आये हम तुम्हारे साथ तुम्हारे वो सिफारिशी नहीं देखते जिनके बारे में तुम्हे यकीन था कि वोह तुम्हारे लिए अल्लाह के शरीक है।" (अनआम–आयत–94) आम इन्सान को छोड़िये फरिश्तो के बारें में अल्लाह ने फ़रमाया– "आसमान में कितने फरिश्ते है कि उनकी सिफारिश उन्हें कुछ फायदा ना देगी। मगर इसके बाद कि अल्लाह इजाज़त दे और जिसके लिए वह राज़ी हो जाए।" (नज्म–आयत–26) एक जगह इस तरह फरमाया– "जिस दिन कोई सिफारिश फायेदा न देगी मगर उसकी जिसे रहमान इजाज़त दे और उसकी बात से राज़ी हो जाए।" (ताहा–आयत–109)

हाजी साहब अपने पीर को मदद के लिए पुकार रहें है। और अल्लाह फरमाता है "ऐ नबी (सल्ल)! इन से कह दीजिए जिनको तुम अल्लाह के अलावा (कुछ) समझते हो, उनको पुकारों। वह तो तकलीफ को हटाने और दूर करने के भी मालिक नहीं है।" (इस्रा–आयत–56) और हाजी साहब पीर साहब से कह रहे है।– तुम मददगार मदद इमदाद

को फिर खौफ क्या जबकि अल्लाह के रसूल सल्ल फरमाते हैं– "मैं अपनी जान के लिए भी नफ़े या नुकसान का मालिक नहीं। मगर जो अल्लाह चाहे।" (आराफ–आयत–188) अल्लाह ने नबी सल्ल. से यह भी कहलवाया–ऐ नबी सल्ल. कह दीजिए कि मैं तुम्हारे लिए किसी नुकसान या भलाई का इख्तियार नहीं रखता।" (जिन्न–आयत–21) जब जंगे उहद में ज़ख्मी होने के बाद आप सल्ल. ने यह बद दुआ की "वह कौम कैसे कामयाबी पायेगी जिसने अपने नबी के सर को ज़ख्मी कर दिया।" तो अल्लाह ने फरमाया ऐ नबी! तकदीर के मामलात आपके इख्तियार मे नहीं।" (आले इमरान–आयत–128) किसी इन्सान के भरोसे आखिरत से बेखौफ हो जाना अकलमन्दी नहीं। ईमान वाले तो यह कहते है "अल्लाह हमें काफी है और वह अच्छा कार साज़ है। अच्छा दोस्त और अच्छा मददगार है।" (आले इमरान–आयत–173) अल्लाह तआला खुद फरमाता है "अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मदद करने वाला नहीं।" (सज्दा–आयत–4 व अहज़ाब–आयत–17) मुसलमान तो हर नमाज़ में यह इकरार करता है "ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं।" (फातेहा–आयत–5) और यहां इल्तेजा गैरों से की जा रही है। जबकि अल्लाह फरमाता है– "अल्लाह के अलावा उनको न पुकारो। जो न तुम्हे नफा दे सकें और न नुकसान। अगर ऐसा किया तो ज़ालिमों में से होंगे।" (युनुस–आयत–106) अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया – "अल्लाह से उसका फ़ज़ल मांगो। बेशक ! अल्लाह मांगने वाले को पसन्द करता है।" (तिर्मिजी–3308) आप सल्ल0 ने इब्ने अब्बास रजि0 से फरमाया था "जब तू सवाल करे तो अल्लाह से मांग।" (तिर्मिजी) हर चीज़ अल्लाह से मांगो यहां तक कि जूते का तस्मा भी जब वह टूट जाए।" (अबू यअला व तिर्मिजी–3347) इमाम अहमद रह. और दूसरे अइम्मा के नज़दीक मखलूक से इल्तेजा करना जाइज़ नहीं। इसलिए कि अल्लाह फरमाता है– गिड़–गिडा कर और आहिस्ता–आहिस्ता अपने रब को पुकारो।" (आराफ–आयत–55) यहा मेहशर में भी हाजी साहब अपने पीर जी को पुकारने की बात कह रहें है। जिस दिन के बारे में अल्लाह फरमाता है "क्या जिस पर अल्लाह का

अज़ाब साबित हो गया। पस! क्या तू उनको जो आग मे है निकाल सकता है? (ज़ुमर–आयत–19) क्या हाजी साहब का अपने पीर को पुकारना शिर्क नहीं है? इसलिए कि मदद तो सिर्फ अल्लाह ही की तरफ से आ सकती है। " (अनफ़ाल–आयत–10) जब पीर व मुरशिद हाजी साहब खुद गैरूल्लाह से मदद माँग रहे हैं तो मुरीद बेचारा क्या करे? कहता है–

"या मुहम्मद मुस्तफा फ़रियाद है
ऐ हबीबे किबरिया फरियाद है

सख़्त मुश्किल में फंसा हूं आजकल
ऐ मेरे मुश्किल कुशा फरियाद है" (कसाइद कासमी–पेज–22)

क़ासिम नानोतवी साहब इस तरह मदद मांगते है "मदद कर ऐ करम अहमदी कि तेरे सिवा नहीं है क़ासिम बेकस का कोई हामीकार" (कसाइद कासमी–पेज–6) जबकि तमाम अम्बिया अलैहि.ने मुसीबत और ज़रूरत के वक्त सिर्फ अल्लाह ही को पुकारा। इसलिए कि मखलूकात व इन्सान तो मजबूर हैं और मुख्तारेकुल अल्लाह तआला है। "जिनको तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो, वो तुम्हारे तरह इन्सान ही थें।" (आराफ–आयत–194) इससे बड़ी बेवकूफी क्या होगी कि उससे मांगा जाए जो ज़मीन व आसमान में एक ज़र्रे का भी मालिक नहीं। नबी सल्ल. के ज़माने मे एक मुनाफिक़ मुसलमानों को तक्लीफ दिया करता था। कुछ ने कहा– चलों अल्लाह के रसूल सल्ल. से मदद लेते हैं। तो नबी सल्ल. ने फरमाया – मदद मुझसे नहीं मांगी जाती बल्कि अल्लाह से मांगी जाती है।" (तबरानी व मुसनन्द अहमद–जिल्द–5 पेज–317) जंगे बदर के मौके पर आप सल्ल. खुद यह दुआ मांगते है– ऐ अल्लाह! अगर तू ने मुसलमानों की इस जमाअत को हलाक कर दिया तो ज़मीन पर कभी भी तेरी इबादत नहीं की जाएगी।" (मुसनद अहमद–जिल्द–1 पेज–30) कुल मिलाकर यह कि दुआए, इल्तेजाए सिर्फ अल्लाह से करना चाहिए। उसके अलावा किसी और को पुकार के अपनी आखिरत न बिगाड़नी

चाहिये कि यह शिर्क होगा।

कब्रों से इस्तेफ़ादा

खलील अहमद साहब सहारनपुरी लिखते है– "मशायख की रूहो से फायदा उठाना और उनके सीनों और कब्रों से बातिनी (अन्दरूनी) फायदे पहुंचना, सो बेशक सही है।" (अल मुहन्न्द अलल मुफन्नद–पेज–39) जैसे–मौलाना मोइनुद्दीन साहब मौलाना मोहम्मद याकूब साहब के सबसे बड़े बेटे थे। वोह हज़रत याकूब साहब की एक करामत (जो बाद वफात ज़ाहिर हुई) बयान करते हैं कि एक दफा हमारे नानोता में जाड़े बुखार की बहुत कसरत हुई। सो जो शख्स मौलाना साहब की कब्र से मिट्टी ले जाकर बांध लेता। उसे ही आराम हो जाता। बस इस कसरत से लोग मिट्टी ले गये कि मैं जब भी कब्र पर मिट्टी डलवाता तब ही खत्म हो जाती। जब कई दफा मिट्टी डलवा चुका तो पेरशान हौकर एक दफा मौलाना (वालिद साहब) की कब्र पर जा कर कहा–आप की तो करामत हो गई और हमारी मुसीबत आ गई। याद रखो अगर अब कोई अच्छा हुआ तो हम मिट्टी नहीं डालेंगे। ऐसे ही पड़े रहोगे और लोग जूता पहने तुम्हारे ऊपर ही से चलेंगे। बस उसी दिन से किसी को आराम न हुआ। जैसे शोहरत आराम की हुई थी वैसे ही यह बात भी मशहूर हो गई कि अब आराम नहीं होता। फिर लोगों नें मिट्टी ले जाना बन्द कर दिया। (अरवाहे सलासा–पेज–339) देखा आपने मौलाना मोइनुद्दीन साहब को यकीन था कि बीमारी से शिफा उनके वालिदे मुहतरम कब्र के अन्दर सोते हुए मिट्टी जो कब्र के ऊपर थी के ज़रिये पहुंचा रहें है। यह भी कि जब वह वालिद साहब को धमकी देंगे तो न सिर्फ यह कि वह सुन लेंगे बल्कि डर भी जायेंगे। जबकि अल्लाह फरमाता है–"वही सेहत व शिफा देने वाला है।" (शोअरा–आयत–80)

अक़ीदा इल्में गैब

नजमुद्दीन साहब लिखते हैं– "उलमा ए देवबन्द हरगिज़ यह नहीं

कहते कि अल्लाह के सिवाए किसी को गैब की कोई बात मालूम नही हो सकती।'' ''उलैमा ए देवबन्द इस बात के भी कायल है कि कुछ गैबी उलूम अम्बिया, औलिया, असफ़िया को तो छोड़िये आम लोगों को भी मालूम हो जाते हैं।'' (ज़लज़ला दर ज़लज़ला—पेज—101 व 98) एक और साहब लिखते हैं— ''रहा औलिया अल्लाह का ज़िन्दा इन्सानों की तरह आलमे बरज़ख में दुनिया वालों के हालात का इल्म हो जाना तो ऐसे इल्म को इल्मेगैब बताने वाला सख्त नादान और जाहिल है। (इन्किशाफ़—पेज—93) मौलवी मोहम्मद यासीन साहब लिखते हैं— शैख जो बात कहता है, देखा कर कहता है।'' (तज़किरतुर्रशीद—जिल्द—पेज—122) और हाजी इमदादुल्लाह साहब लिखते है— ''लौग कहतें हैं कि इल्मे गैब अम्बिया और औलिया को नहीं होता। मगर में कहता हूं कि अहले हक़ जिस तरफ नज़र करते हैं दरयाफ्त (मालूम करना) व इदराक (अकल से पता लगाना) और गैबीयत (छिपी बातें) का उनको इल्म होता है।'' (शमाइमे इमदादिया—पेज—61) मौलवी अनवारूल्हसन हाशमी साहब फरमाते है— ''कुछ कामिल ईमान बुजुर्गो को जिनकी उम्र का ज्यादा हिस्सा नफ़्स को पाक करने और रूहानी तरबियत में गुज़रता है। अन्दरूनी और रूहानी हैसियत से उनको अल्लाह की तरफ से ऐसी ताकत मिल जाती है कि ख्वाब और जागते में उन पर वो बाते खुद ब खुद खुल जाती है जो दूसरों की नज़रों से ओझल है।'' (मुबश्शिरात दारूलउलूम—पेज—12) हालांकि अल्लाह फरमाता है— ऐ नबी (सल्ल0)! कह दीजिए की ज़मीन व आसमान में रहने वालो में से गैब की बात सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता।'' (नम्ल—आयत—65) ''गैब अल्लाह ही के लिए है।'' (युनुस—आयत—20) ''ऐ नबी सल्ल! कह दीजिए कि मैं यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खजाने है और न मैं गैब जानने वाला हूं।'' (अनआम—50) ''ओर अगर मैं गैब जानता तो भलाईयों में आगे निकल जाता और मुझे कोई बुराई नहीं पहुंचती। '' (आराफ़—आयत—188) बेशक! अल्लाह ही ज़मीन व आसमान का गैब जानने वाला है।''(फ़ातिर—आयत—38) फैसला आप कीजिए कि कुरआन सच्चा या..................................

हुसैन अहमद मदनी साहब के बारे में लिखा है— ''रमज़ानुल मुबारक के मौके पर अक्सर ऐसा हुआ कि जिस दिन आप सूरह 'इन्ना अन्जलना' वितरों में तिलावत करते उस दिन शबेकद्र होती और ईद की चांद रात के बारे में भी अक्सर यह तजुरबा रहा कि जिस दिन चांद रात होती थी। हज़रत उसी दिन सुबह से ईद का इन्तेज़ाम करते थे औंर एक दिन पहले कुरआन खत्म कर देते थे। चाहे 29 तारीख ही क्यों न हो। हज़रत मदनी के इस तरीके की वजह से हज़रत का हर ख़ानकाही (मुरीद) बता सकता था कि आज चांद रात है। (अन्फ़ास अल कुदसिया—पेज—185) इसी तरह मौलवी अब्दुल कादिर देवबन्दी साहब के बारे में लिखा है— ''अगर ईद का चांद 30 का होने वाला होता तो पहली रात तरावीह में एक सिपारा पढ़ते और चांद 29 का होने वाला होता तो पहली रात दो सिपारे पढ़ते। चूंकि इसका तजुरबा हो चुका था। इसलिए शाह अब्दुल अजीज साहब पहले रोज़ आदमी को भेजते थे कि देख आओ मियां अब्दुल कादिर ने आज दो पारे पढ़े है तो शाह साहब फ़रमाते कि ईद का चांद 29 ही का होगा। देखा आपने? हज़रत को एक माह पहले ही पता चल जाता था कि चांद 29 का होगा या 30 का?काश आज भी कोई ऐसा बुजुर्ग होता तो लोगों को परेशानी से निजात मिल जाती। उस पर यह कि इस वाकिए के बारे में मौलवी महमुदुल्हसन साहब देवबन्दी फरमाते है ''यह बात दिल्ली में इतनी ज्यादा मशहूर हो गई कि बाजार और तिजारत इसी पर मबनी हो गये।'' (अरवाहे सलासा—पेज—58) इसी सिलसिले का एक और वाकेआ देखिए—''एक दफा हकीम खादिम साहब अपनी मस्जिद में बैठे थे। रमज़ान का महीना और इफ्तार का वक्त था। आपने रोज़ा इफ्तार कर लिया। कुछ राफ़जी (शिया) आए ओर कहा कसम है इमाम हुसैन की! उस वक्त सूरज गुरूब नहीं हुआ था। हकीम साहब बोले कि तुम गलत कहते हो। सूरज डूब चुका था। शियाओ ने कहा नहीं डूबा था। इस पर हकीम साहब फिर बोले—हमारे दिल में दीन व ईमान है। हमारे दिल की गवाही गलत नहीं है। अगर तुम्हे इसमे कुछ शक है तो कल मुझे एक कमरे में बन्द कर देना और तुम लोग सूरज को देखते रहना। जिस वक्त वह डूबेगा मैं तुम्हे बता

दूंगा। तब तुम्हे यकीन हो जायेगा। उन्होने इस दावे को अजीब समझकर कहा कि ठीक है। अगले दिन सूरज के डूबने से पहले हकीम साहब कमरे में बन्द कर दिये गये और शिया हज़रात छत पर चढ़ कर सूरज को देखने लगे। जैसे ही सूरज गुरूब हुआ। फौरन हकीम साहब ने बंद कमरे से इसकी खबर दे दी। तब शियाओं को उनके इस दावे कि सच्चाई का यंकीन हुआ।" (अरवाहे सलासा–पेज–189)

पैदाइशे मौलूद

अल्लाह तआला का यह दावा है– "अल्लाह जानता है कि हर मादा ने क्या उठाया हुआ है? (रअद–8) और वह जानता है कि रहमो (गर्भो) में क्या है? और मादा जो उठाती है या जनती है मगर अल्लाह के इल्म में है। (लुकमान–34) मगर देवबन्दी आलिम इस बारे में जो अकीदा रखते है– वह देखिये "शाह अब्दुर्रहीम साहब विलायती के एक मुरीद थ। नाम अब्दुल्लाह खान था और कौम के राजपूत थे। इनकी हालत यह थी कि अगर किसी के घर में हमल होता और वह तअवीज़ लेने के लिए आता तो आप फरमा दिया करते थे कि तेरे घर में लड़का होगा या लड़की और जो आप तबलाते थे वही होता था।" (अरवाहे सलासा–पेज–158) इस पर जब किसी बरेलवी ने एतराज किया कि तुम अपने उलमा के बारे में यह (गैब) का अकीदा रखते हो तो नजमुद्दीन साहब देवबन्दी ने फरमाया–"उलमा ए देवबन्द कब यह कहते हैं कि बुजुर्गानेदीन के लिए पर्दे (गैब के) नहीं उठाये जाते।" (ज़लज़ला दर ज़लज़ला–पेज–92) इसी तरह के एक और वाकिए का यह जवाब देते हैं– "अगर कुछ दिनों पहले (हालांकि वहां कुछ सालों का जिक्र है) मौलवी सईद अहमद साहब अकबराबादी के वालिद के पीर काज़ी अब्दुल गनी साहब को बजरिये इल्हाम मालूम हो गया कि बच्चा पैदा होगा तो कौन सी अजीब बात है।" (ज़लज़ला दर ज़लजला–पेज–110) मौलवी हबीबुर्रहामन साहब ने फरमाया "राव अब्दुर्रहमान साहब पंजाब में शाह

साहब रह. के खलीफ़ा थे और बड़े ज़बरदस्त साहिबे क़श्फ़ थे। क़श्फ की यह हालत थी कि कोई लड़का या लड़की के लिए तअवीज़ मांगता तो बेतकल्लुफ फरमाते–जा तेरे लड़का होगा या लड़की। लोगों ने अर्ज किया कि यह कैसे आप बताते हैं?फरमाया क्या करूं? अपने आप मौलूद (पैदा होने वाले) की सूरत सामने आ जाती है। (अरवाहे सलासा–पेज–271) क्या यह हज़रात अल्लाह की बराबरी नहीं कर रहें?

मरने का इल्म

अल्लाह का यह फरमान है–"कोई नफ़्स नहीं जानता कि वह किस जगह मरेगा।" (लुकामन–34) अब ज़रा देवबन्दी अकीदा भी देखलें–मौलाना मुजफ्फर हुसैन 23 जमादुस्सानी 1282 हिजरी को बैतुल्लाह (काबा) के लिए रवाना हुए। अभी मक्का पहुंच न पाए थे कि उन्हें इसहाल (पेट का मर्ज) की बीमारी लाहक हो गई। मक्का मे एक दिन हाजी इमदादुल्लाह साहब से फरमाया कि मेरा दिल चाहता है कि मौत मुझे मदीना में आए। मगर लगता यह है कि मेरी मौत का वक्त करीब आ गया है। आप मुराकेबा कीजिए। हाजी साहब ने मुराकेबा करने के बाद कहा कि आप मदीना पहुंच जाएगे। कुछ दिनों के बाद आप अच्छे हो गये। अगले ही दिन मदीना को रवाना हो गये। मदीना पहुंचने मे अभी एक मंजिल़ बाकी थी कि आप फिर बीमार हो गये और 10 मुहर्रम 1283 हिजरी को आपका इन्तेकाल हो गया। उसमान रजि. की कब्र के पास दफ़न हुए। (अरवाहे सलासा–पेज–222) मौलवी रियाज़ अहमद फैजाबादी हज़रत हुसैन अहमद मदनी साहब से अपनी आखिरी मुलाकात का जिक्र करते हुए कहते हैं – मैने हज़रते मदनी साहब से कहा कि साल के आखिर में इन्शा अल्लाह ज़रूर हाज़िर हूंगा। तो मदनी साहब ने फरमायां– मुलाकात नहीं होगी। अब तो हश्र के मैदान में ही इन्शा अल्लाह मिलेगे।" इस पर मेरी ओर जो लोग मेरे साथ थे सबकी आंखे नम हो गई। (शैखुल इस्लाम–पेज–156) जबकि हज़रत को

अपनी मौत का यकीनी इल्म और भीड़ को उनकी मौत का पक्का यकीन। दोनों ही बातें तौहीद के खिलाफ हैं। जब कुछ लोगों ने इस अकीदे पर ऐतराज किया और कहा कि यह शिर्किया अकीदा है तो जवाब अहले देवबन्द से यह मिला "अगर बकौल मौलाना अरशदुल कादरी इसे मानभी लें कि मदनी साहब को अपनी मौत से पहले उसका इल्म हो गया था तो सवाल यह है कि बुजुर्गाने दीन का ज़का व फुरासत से इन चीज़ों का अक्ल मे न आने वाली बात क्यों समझा जाता है।" (इन्केशाफ–पेज–234)

बारिश कब होगी?

रानी सागरी साहब की बेटी सामेना खातून बयान करती है– जब हमारा घर बनने लगा तो वालिद साहब के कहने के मुताबिक सबसे पहले पायखाना का काम शुरू हुआ। मौसम बरसात का था। लेकिन बारिश नहीं हो रही थी। धान की रोपनी हो चुकी थी। किसान बहुत परेशान थे। मैंने वालिद साहब से गुजारिश की कि बारिश के लिए दुआ कीजिए तो फ़रमाया कि बारिश कैसे होगी? अपना पायखाना जो बन रहा है? खराब न हो जाएगा?मैंने पूछा वह कब तक बन जाएगा? दीवार पूरी हो गई है रात को छत की ढ़लाई हो जाएगी। मैं खामोश हो गई। दो दिनों बाद खूद जोर दार बारिश हो गई। मैंने वालिद साहब से कहा। बारिश होने लगी। अब तो पायखाने को नुकसान होगा। कहने लगे बेटा! अब फायदा होगा। मैने फिर पूछा क्या बारिश इसलिए रुकी हुई थी? वालिद साहब कुछ नहीं बोले सिर्फ मुस्कुराते रहे।" (नकीब का मुसलेह उम्मत नं. पेज–04) सोचिए! क्या अल्लाह के यहां उनकी ज़ाती ख्वाहिश इतनी बा असर थी कि धरती का सीना तपता रहा, फसल जलती रही और किसानों की आंहे बाबे रहमत पर सर पटकती रही लेकिन जब तक पायखाना तैयार नहीं हो गया, बारिश को रूकना पड़ा। बारिश कैसे होगी? का जुमला भी साफ़ तौर पर इसी मआनी को ज़ाहिर करता है।

जबकि अल्लाह फरमाता है कि – बारिश वही नाज़िल करता है।" (लुकमान–आयत–34) यह उन पांच गैबों मे से है जिनका इल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं।

सीने में छिपी बातों का इल्म

इर्शादे बारी तआला है– इंसान के दिल मे जो ख्यालात आते है, वोह सब मुझे मालूम है।"(काफ–16) दिल में छिपी बातें और दिल में आने वाले ख्यालात का जानना सिर्फ अल्लाह की सिफत (गुण) है। इसमें न फरिश्ते शरीक है न जिन्न व इंसान। मगर ज़रा देखिए– शैख मुहिय्युद्दीन इबने अरबी 'फतूहाते मक्किया' में 'करामत' की दो किस्में बयान करते है। एक हिस्सी और दूसरी मआनवी। आम लोग सिर्फ करामते हिस्सीया को ही जानते है। जैसे–दिलों की बात मालूम करना, जो गुज़र चुका, मौजूदा गैब और आने वाली गैबी बातों की खबर देना। अब कारिईन खुद इंसाफ से कहें कि यह बातें क्या गैर शरई हैं?जवाब देने से पहले अल्लामा इब्ने अरबी शैखुल इस्लाम साहब का ज़रूर ख्याल रखें।" (इन्किशाफ–पेज–163) फ़िरऔन व हुनूद से बदतर अकीदा रखने वाले इब्ने अरबी को अपना कर अकीदा ए तौहीद कैसे बाकी रह सकता है? इब्ने अरबी की मुहब्ब्त व अकीदत में वहदतुल वुजूद का अकीदा भी मान लिया गया और इल्मे गैब का भी। मौलवी वली मोहम्मद साहब अपने उस्ताद रशीद अहमद गंगोही के बारे में लिखते है– हज़रत के सामने जाने में मुझे बड़ा डर महसूस होता है क्योंकि दिल के वसवसे पर काबू नहीं और हज़रत को उनकी इत्तेलाअ हो जाती है।" (तज़किरतर्रशीद जिल्द–2 पेज–227) मौलवी नज़र मोहम्मद साहब अपने मुरशद रशीद अहमद साहब गांगोही के बारे में लिखते है–मेरी बीवी जिस वक्त आप से बैअत हुई तो चूंकि मुझे कुदरती तौर पर गैरत ज्यादा थी। इसलिए औरत का बाहर आना या किसी अजनबी को आवाज़ सुनाना भी ना पसन्द था। उस वक्त यह वसवसा ज़हन में आया कि हज़रत मेरी बीवी की आवाज़ सुनेंगे। मगर यह हज़रत की करामत थी कि कश्फ़ से मेरे दिल का हाल

मालूम कर लिया और यूं फरमाया– अच्छा घर के अन्दर बिठला कर किवाड़ बन्द कर दो।'' (तजकिरतुर्रशीद जिल्द–2 पेज–59) अशरफ अली थानवी साहब फरमाते है– मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी का दिल बड़ा ही नूरानी था। मैं उनके पास बैठने से डरता था। कि कहीं मेरे ऐब उन पर खुल न जाए।'' (अरवाहे सलासा–पेज–422) मदरसा देवबन्द के बानी क़ासिम साहब नानोतवी फरमाते है–''मौलवी मोहम्मद याकूब साहब देहलवी दिल के अन्दर जो निहायत बारीक चोर होते है, उनसे खूब वाकिफ है।'' (अरवाहे सलासा–पेज–140)

अल्लाह ताअला फरमाता है – ऐ नबी (सल्ल.)! कह दीजिए कि अगर तुम सीनो (दिलों) की बातों को छिपाओ या ज़ाहिर करों अल्लाह उसे जानता है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते और ज़ाहिर करते हो।'' (आले इमरान–आयत–29) ''तेरा रब जानता है जो कुछ उनके दिलों मे है।'' (कसस–49) हम जानते हैं कि दिल में क्या वसवसे आते हैं।'' (काफ़–69)

लेकिन मौलवी नजमुद्दीन साहब फरमाते हैं– ''छिपी गैब की बातों को मालूम करना कश्फ है। इसकी दो किस्में है। एक कश्फे सुगरा और दूसरी कश्फे कुबरा। सालिक अपनी दिली तवज्जो से ज़मीन व आसमान, फ़रिश्ते, कब्र वालों की रूहों, कुर्सी, लोहे महफूज़ अल गरज़ दोनों जहानों का हाल मालूम करलें और देखे तो यह कश्फे सुगरा (छोटा कश्फ) कहलाता है और कश्फे कुबरा (बड़ा कश्फ) यह है कि सालिक अल्लाह तआला का मुशाहेदा करलें। अकाबिरे देवबन्द बल्कि औलिया अल्लाह कश्फे कुबरा को ही दरअसल हुसूले मकसद समझते हैं और कश्फे सुगरा को सिर्फ फायदेमन्द करार देते हैं।' (इन्किशाफ–पेज–36) ''अब छिपी (गैबकी) बातों की इत्तेलाअ हो जाने के बारे में किसी का कोई अखफा बाकी नहीं रहा।'' (इन्किशाफ–174)

हयातुन्नबी सल्ल.

काज़ी मजहर हुसैन देवबन्दी लिखते है– हज़रत अम्बिया अलैहि. अपनी कब्र में खुद अपनी ज़िन्दगी को महसूस करते है ओर हाज़िर होने वालों का सलाम सुनते है। उनके सुनने में कब्रे मुबारक की मिट्टी और दीवारे हाइल नहीं हो सकती। इस अकीदे कि अम्बिया अलैहि.सुनते है पर उम्मत का इज्माअ है।'' (मुफन्नद–पेज–148) मोलवी खलील अहमद साहब सहारानपुरी लिखते है– आंहज़रत सल्ल. ज़िन्दा है, लिहाज़ा धीमी आवाज़ में सलाम करना चाहिए। मस्जिदे नबवी की हद में कितनी ही धीमी आवाज़ मे सलाम किया जाए उसको आं हज़रत सल्ल. खुद सुनते है।'' (तज़किरतुल खलील–पेज–204) अशरफ अली थानवी साहब लिखते है– सलाम सुनना नज़दीक से खुद और दूर से फ़रिश्ते के ज़रिये और सलाम का जवाब देना ये तो हमेशा साबित है।'' (नशरल तय्यब–पेज–142) अल्लामा अनवरशाह काश्मीरी फरमाते हैं– नबी ज़िन्दा है और बेशक कब्र में बहुत से आमाल मसलन अज़ान और नमाज़ 'दारमी शरीफ़ से और कुरआन पढ़ना तिर्मिजी से साबित है।'' (फ़ैजुलबारी जिल्द–1 पेज–183) अशरफ़ अली थानवी साहब शहीद की दुनियावी ज़िन्दगी के बड़ें कायल है। लिखते हैं– एक साहिबे कश्फ हज़रत हाफ़िज के मजार पर फातेहा पढ़ने गये। बाद फातेहा कहने लगे–भाई यह कौन बुजुर्ग है? बड़े दिल्लगी बाज़ है। जब मैं फातेहा पढ़ने लगा तो कहने लगे। जाओं किसी मुर्दा पर पढ़ों। यहां ज़िन्दा पर पढ़ने आए हो। यह क्या बात है? लोगों ने बताया कि यह शहीद है।'' (अरवाहे सलासा–पेज–223) ज़रा सोचिए! मुर्दे को कैसे मालूम हुआ कि कोई कब्र पर आया है। जबकि अल्लाह फरमाता है ''मुर्दा है, ज़िन्दा नहीं है और इन्हें तो यह भी इल्म नहीं कि कब उठाये जायेगे।'' (नहल–आयत–21) इस पर खुबी यह कि फातेहा पढ़ने वाले साहब ने मनो मिट्टी तले दबे शख्स की आवाज़ भी सुन ली?

नबी पर आमाले उम्मत पेश होना

अशरफ अली साहब थानवी सईद बिन मुसय्यब रह. से रिवायत करते हैं ''कोई दिन ऐसा नहीं कि नबी सल्ल. पर आपकी उम्मत के आमाल सुबह व शाम पेश नहीं किये जाते हो।'' (नशरल

तय्यब–पेज–140) एक ज़ईफ हदीस पेश करके यह नतीजा निकालते हैं– पस आपका ज़िन्दा रहना भी कब्र शरीफ में साबित हुआ। (नशरल तय्यब–सफा–141) इसी पेज 141 पर यह मौजूअ (बनावटी) हदीस पेश करते हैं कि नबी सल्ल. ने फरमाया–जो शख्स मेरी कब्र के पास दुरूद शरीफ पढ़ता है उसे मैं सुन लेता हूं और जो दूर से दुरूद पढ़ता है, वह मुझ तक पहुंचाया जाता है।" आगे इसी सफे पर नबी सल्ल. की रूह के लौटाने वाली हदीस लिखकर कहते हैं "इससे ज़िन्दगी में शक न किया जाए। रूह के लौटने का मतलब रूह का मुतवज्जह होना है।" आगे सफा 142 में फरमाते है "बरज़ख में आपके यह मशागिल साबित होते है "उम्मत के आमाल का मुलाहेजा करना, नमाज़ पढ़ना, खाना वहां के मुताबिक खाना, सलाम का सुनना करीब से खुद और दूर से फरिश्तों के ज़रिए।"

कश्फ़े कुबूर

मौलवी अल्लाह यार साहब देवबन्दी मौलवी हुसैन अहमद मदनी साहब के बारे में लिखते है–"कश्फे कुलूब (दिलों के हालात) ओर कश्फे कुबूर (कब्रों के हालात) दोनों में हज़रत को अल्लाह ने बड़ा हिस्सा अता फरमाया था।" (अकाइद व कमालात उलमा ए देवबन्द–69) एक मौलवी साहब लिखते है– उलैमा ए देवबन्द यह कब कहते है कि बुजुर्गाने दीन के लिए हिजाबात (पर्दे) उठाए नहीं जाते।" (ज़लज़ला पेज–24) यह अकीदा इस वाकिए से और साफ हो जाता है–तहरीके खिलाफत के दिनों में एक नक्शबन्दी बुजुर्ग देवबन्द आए। मौलाना नानोतवी का विसाल हो चुका था। हज़रत नानोतवी के मज़ार पर हाज़िर हो कर मराकिबा किया। देर तक मराकेबे में रहे। बाद में फरमाया "मैने तहरीके खिलाफत में हाकिमों की सख्तियों का जिक्र किया तो नानोतवी साहब ने (कब्र के अन्दर से) मौलाना महमूदुल हसन की तरफ इशारा करके फरमाया कि मौलवी महमूदुल हसन अल्लाह के अर्श को पकड़कर इसरार कर रहे हैं कि अंग्रेज को हिन्दुस्तान से जल्द निकाल दिया

जाए।" (नक्शे हयात–पेज–473) मौलवी अल्लाह यार साहब देवबन्दी इस वाकेए पर यह तब्सिरा करते हैं– यह मौलाना मदनी का बयान है कि इससे कई बातें साबित हुई, मसलन–रूह से बात करना, कब्र का हाल जानना, रूह का कब्र में होना, रूह को दुनिया के हालत मालूम होना, बरज़ख में दुनिया वालों के लिए दुआ या बददुआ करना और रूह से फायदा हासिल होना।" (अकाइद व कमालात उलमा ए देवबन्द–पेज–59)

कश्फ़े कुलूब

मौलवी अखलाक हुसैन कासमी एक वाकिए पर तब्सिरा करते हुए लिखते है– "हाजी साहब के दिल में जो ख्याल गुज़रा। हज़रत मदनी की ईमानी ताकत ने उसे महसूस कर लिया। इसे इस्तेलाह में 'कश्फे कुलूब कहते हैं।" (शैखुलइस्लाम–पेज–322) जब बरेलवी आलिम ने ऐसे ही एक किस्से पर ऐतेराज़ किया तो एक देवबन्दी आलिम ने लिखा–"अगर हम थोड़ी देर के लिए यह मान भी ले कि तमाम वाकिआत इस पर गवाह हैं कि हज़रत गंगोही साहब करामत के ज़रिए दिलो के खतरात पर या छिपी बातों पर मुत्तेलाअ हो गये तो फिर इसमे ताअज्जुब की क्या बात है? (इन्किशाफ पेज–175) एक और जगह लिखते है– मुकाशिफात को इल्मे गैब बताने वाले इल्म व फन से कोरे, सख्त जाहिल ओर शरीअत के मिजाज़ से अन्जान हैं।" (इन्किशाफ–पेज–126) तफ्सीर माजिदी लिखने वाले अब्दुल माजिद दरियाबादी साहब अपने पीर के बारे में फरमाते हे–मेरे दिल ने कहा कि देखो रोशन ज़मीर है न। सारे राज़ उन पर खुलते जा रहें है। साहिबे कश्फ व करामत इन से बढ़कर कौन होगा? "आगे फरमाया खैर उस वक्त तो गहरा असर इस गैबदानी और कश्फ सदर का लेकर उठा।" (हकीमुल उम्मत–पेज–23) कासिम नानोतवी साहब के एक नौकर दीवान जी के बारे में मौलाना हबीबुर्रहमान साहब साबिक मुहतमिम दारूलउलूम देवबन्द फरमाते है– उस ज़माने में दीवान जी की कश्फी हालत इतनी बढ़ी कि बाहर सड़क पर आने जाने

वाले नज़र आते रहते थे। दर व दीवार का पर्दा उनके बीच जिक्र के वक्त बाकी न रहता था।" (हाशिया सवानेह कासमी–जिल्द–2 पेज–73) मौलवी फ़ज़ल हक साहब शाह अब्दुल कादिर से हदीस पढ़ते थे। शाह साहब बड़े साहिबे कश्फ थे और इस खानदान में आपका कश्फ सबसे बड़ा हुआ था। जिस दिन मौलवी फ़ज़ल हक़ किताबे किसी नौकर पर रखवाकर ले जाते और शाह साहब तक पहुंचने से पहले खुद ले लेते। शाह साहब को कश्फ से मालूम हो जाता और आप मौलवी फ़ज़ल हक साहब को सबक नहीं पढ़ाते थे। लेकिन जब किताबे खुद उठाकर ले जाते तो हज़रत को कश्फ हो जाता ओर उस दिन सबक पढ़ाते थे।" (अरवाहे सलासा–पेज–69)

इल्में लदुन्नी

इन्किशाफ के मुसन्निफ लिखते हैं– इल्में लदुन्नी वह इल्म है जो बगैर बाहरी असबाब और वसाइल के दिल में खुद ब खुद पैदा हो जाए। ऐसे इल्म का सुबूत तो कुरआन व हदीस में मौजूद है। औलिया अल्लाह के लिए अल्लाह की तरफ से एक इनाम है। लिहाज़ा इसका इंकार वही शख्स कर सकता है जो इस अज़ीम नेअमतसे महरूम और इल्मे लदुन्नी की हकीकत से बिल्कुल अंजान है।" (इन्किशाफ़–पेज–203–204)

मौत व हयात का मालिक

ज़िन्दगी और मौत का मालिक अल्लाह है। जैसा कि वह खुद फरमाता है– "यह कि वही मारता है ओर ज़िन्दा करता है।" (नज़्म–आयत–44) "कोई नफ्स भी अल्लाह के हुकम के बिना नहीं मरता।" (आले इमरान–145) अल्लाह वह हस्ती है जिसने तुम्हे पैदा किया, फिर रिज़्क दिया, फिर तुम्हे मारेगा और ज़िन्दा करेगा।" (रूम–आयत–40) "अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं। वहीं ज़िन्दा करता है और मारता है।" (आराफ–आयत–158) अल्लाह

वह हस्ती है जो ज़िन्दा करता है, मारता है और उसी की तरफ लौट कर जाना है।" (युनुस–आयत–56) "बेशक! हम ही ज़िन्दा करने वाले है और मारने वाले भी ओर हम ही वारिस है।" (हिज्र–आयत–23) (जो अल्लाह के अलावा हैं) वो ज़िन्दगी, मौत और फिर उठाये जाने के मालिक नहीं।" (फुरकान–आयत–03)

अब ज़रा देवबन्दी हज़रात का अकीदा भी देख लीजिए– एक जगह मौलाना कासिम नानोतवी साहब के वअज का प्रोग्राम बना। शिया लोगों ने जलसे को नाकाम बनाने के लिए लखनऊ से अपने चार मुज्तहिद बुलाकर हर एक को दस–दस ऐतेराज़ देकर जलसागाह के चारों कोनो में बैठा दिया। हज़रत नानोतवी साहब ने हर मुज्तहिद के दिल में छुपे हुए ऐतेराज़ को उसी तरतीब से बयान करके रद्द फरमाया जिस तरतीब से वो अपने दिलों में छुपाकर लाए थे। मुज्तहिदीन व मुकामी शिया लोगों ने इस सुबकी का बदला लेने के लिए एक नौजवान का फरजी (नकली) जनाज़ा बनाया। आगे का वाकिआ रावी की ज़ुबानी सुनिए– प्रोग्राम यह था कि हज़रत जब दो तक्बीरे कहें तो साहिबे जनाज़ा एक दम खड़ा हो और उस पर हज़रत की खिल्ली उड़ाई जाए। हज़रते वाला ने कहा–आप शिया लोग है और में सुन्नी हूं। नमाज़ के उसूल अलग हैं। शिया के जनाज़े की नमाज़ मुझसे पढ़वाना कब जाइज़ होगी? शियों ने अर्ज किया कि हज़रत बुज़ुर्ग तो हर कौम का बुज़ुर्ग होता है। आप तो नमाज़ पढ़ा ही दें। हज़रत ने उनके इसरार पर नमाज़ पढ़ाना कुबूल कर लिया और जनाज़े पर पहुंच गये। मजमा था। हज़रत एक तरफ खड़े हुए थे कि चेहरे पर गुस्से के आसार देखे गये। आंखे लाल थी ओर गुस्सा चेहरे से ज़ाहिर था। नमाज़ के लिए कहा गया तो आगे बढ़े ओर नमाज़ शुरू कर दी। दो तक्बीरे कहने के बाद जब तय शुदा प्रोग्राम के मुताबिक जनाज़े में हरकत नहीं हुई तो किसी ने पीछे से हूं के साथ सिसकारी दी। मगर वह न उठा। हज़रत ने चारों तक्बीरात पूरी करके उसी गुस्से के लहज़े में कहा कि अब यह कयामत की सुबह से पहले नहीं उठ सकता। देखा गया तो वह मर चुका था। शियों में

रोना–पीटना मच गया।" (हाशिया सवानेह क़ासमी–जिल्द–2 पेज–71) अहमद हुसैन साहब का एक वाकेआ भी पढ़ते चलिए–"एक बार किसी के लिए बददुआ की तो वह मर गया। बजाए इसके कि अपनी करामत से खुश होते डरे और एक खत् के ज़रिए हज़रत थानवी साहब से मसअला पूछा कि मुझ से कत्ल का गुनाह तो नहीं हुआ? थानवी साहब ने ईमान को बर्बाद करने वाला यह जवाब लिखा–अगर आप में तसर्रुफ की ताकत है और बददुआ करते वक्त उसे काम में लिया था। यानि यह ख्याल इरादे और कूव्वत के साथ किया था कि यह शख्स मर जाए तब तो कत्ल का गुनाह हुआ।" (अशरफुस्सवानेह जिल्द–1 पेज–125) कहां गया अल्लाह का दावा कि मैं ही मौत व जिन्दगी का मालिक हूँ?

शाफ़ी (शिफ़ा देने वाला)

शिफा देना अल्लाह की खूबी है। जैसा कि इब्राहीम अलैहि. ने फरमाया "जब मैं बीमार होता हूँ तो वह शिफा देता है।" (शोअरा–आयत–26) और अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया "ऐ लोगों के रब! बीमारियां दूर कर, शिफा दे। तू ही शिफा देने वाला है। तेरी शिफा के अलावा कोई शिफा नहीं।" (बुखारी) अब नीचे लिखे वाकिए से आप अन्दाज़ा लगाए और इस जुमले को बार–बार पढ़ें– "हाफिज़ शहीद के साथ भी चाहा जाता तो यही किया जा सकता था। यानि उन्हें मरने से बचा कर शिफायाब किया जा सकता था।" मौलाना नजीब साहब लिखते है "इस सिलसिले में मौलाना नानोतवी साहब को भी गोली लगी थी वह भी सर पर जो बेहद नाजुक जगह होती है। उस से दाढ़ी के कुछ बाल भी जल गए। लोगों ने समझा कि शहीद हो गये। मगर एक दम हिम्मत से उठे और चेहरे पर हाथ फेरा तो ऐसा था कि कुछ हुआ ही नहीं।" (सवानेह कासमी--जिल्–2 पेज–160) इस वाकिए का जिक्र मौलाना आशिक अली साहब ने इन लफ्जों में किया "हज़रत मौलाना कासिम अल उलूम एक दफा सर पकड़ कर बैठ गए। कुछ ने देखा कि

कनपटी पर गोली लगी और दिमाग पार करके निकल गई। आला हज़रत (मौलाना गंगोही साहब) ने लपक कर ज़ख्म पर हाथ रखा। और फरमाया मियां क्या हुआ? उसके बाद अमामा उतारकर जो सर देखा तो कहीं गोली का निशान न मिला और तआज्जुब की बात यह कि खून से तमाम कपड़े तर।"(सवानेह कासमी–जिल्द–2 पेज–160) इसी वाकिए को मौलाना याकूब कुछ इस तरह बयान करते है– जब कासिम नानोतवी साहब को गोली लगी तो पूछा क्या हुआ? फरमाया गोली लगी। मगर अमामा उतार कर जो देखा तो गोली का निशान कहीं नहीं था। और तआज्जुब है कि खून से तमाम कपड़े तर।" (सवानेह कासमी जिल्द–2 सफा–160) इस एक वाकिए के तीनों रावियों का इस बात से इत्तेफाक हे कि गोली सर में लगी। देखा गया तो गोली का नामोनिशान भी नहीं मिला मगर सारे कपड़े खून में तर। इस वाकिए पर हम क्या खाक तब्सेरा करे। खुद देवबन्दी उलैमा ही का तब्सरा सुन लें–

मौलाना मनाज़ीर अहसन गीलानी फरमाते हैं– "बहरहाल हासिल यही है कि गोली लगने के बाद जो कुछ होना चाहिए था। वह नहीं हुआ। यही लोगो का मुशाहेदा है। अब उसकी तौजीह कुछ भी कीजाए ख़्वाह हमारें सरदार इमामुल कबीर के बातनी तसर्रुफ का नतीजा इसको ठहराया जाए। जैसा कि मौलाना तय्यब साहब की रिवायत से मालूम होता है या हज़रत गंगोही साहब की तवज्जोह को उसमें दाखिल माना जाए। जिसकी तरफ मौलाना आशिक इलाही मेरठी के बयान में इशारा मिलता हैं। फिर लिखते है कि– हाफिज़ शहीद के साथ भी चाहा जाता तो यही करके दिखाया जा सकता था। (सवानेह कासमी–जिल्द पेज–162) मौलाना तय्यब साहब इस वाकिए पर– यूं तबसेरा करते हैं "मुसन्निफ़ इमाम याकूब साहब के बयान से मालूम होता है कि गोली को बेअसर हो जाना खुद हज़रते वाला की ही करामत थी। फिर फ़रमाते हैं– मैंने बहुत से बुज़र्गो से सुना कि पीर हाजी इमदादुल्लाह साहब ने एकतअवीज़ भी दिया था कि इसे पगड़ी में रखे। कुछ सच्चे लोगो से सुना है कि हाफिज़ साहब शहीद ने उगंली से अपना थूक पैशानी पर लगा दिया था। मौलाना

आशिक अली ने हज़रत गंगोंही साहब के तसर्रूफ की तरफ़ ईमा किया है।" (सवानेह कासमी–जिल्द 2 पेज–161)

रूह का तमस्सुल

लिखते हैं– " कुछ लोग जो तसर्रूफ वाले होते हैं (उनको) अनासिर (असल, बुनियाद) पर कुदरत हो जाती है कि वह उस चन्द अजसाद (जिस्म, शरीर) को तरकीब देकर शक्ल बदल लेते हैं। चूंकि रूह में इन्बिसात है। उससे एक रूह को चन्द अजसाद के साथ मिलाकर कुछ सूरतों में तबदील हो सकते हैं। "(मकालात हिक्मत–पेज–31) इस अकीदे को समझने कि लिए यह वाक़िआ पढ़िये– क़ारी तय्यब सहाब फ़रमाते हैं कि– मदरसा देवबन्द के सदर मुदर्रिसीन के बीच कुछ झगड़ा हो गया। उस वक्त रफीउददीन साहब महतमिम मदरसा थे और सदर मुदर्रिस मेहमूदुल्लाह साहब भी झगड़े में शरीक हो गये और झगड़ा लम्बा खींच गया। "इसी दोरान एक दिन सुबह फज्र की नमाज़ के बाद मौलाना रफीउदीन साहब रह. ने मौलाना महमूदुल्लाह साहब को अपने हुजरे में बुलाया (जो दारुल उलूम देवबन्द में हैं) मौलान हाज़िर हुए और बन्द हुजरे (कमरे) के किवाड़ खोल कर अन्दर गये। मौसम सख्त सर्दी का था। मौलाना रफीउद्दीन साहब ने फरमाया– पहले यह मेरा रूई का लबादा देख लो। मौलाना ने लबादा देखा तो तर था और खूब भीग रहा था। कहा कि– वाक़िया यह है कि अभी–अभी मौलाना नानोतबी साहब रह0 जसदे–उन्सरी (हक़ीक़ी जिस्म) के साथ मेरे पास तशरीफ़ लाए थे। जिससे मैं एक दम पसीना–पसीना हो गया और मेरा लबादा तर बतर हो गया। उन्होंने यह फरमाया कि महमूदुल हसन से कह दो कि वह इस झगड़े में ना पड़े। बस मैंने यही कहने के लिए बुलाया है। मौलाना महमूद साहब ने अर्ज़ किया कि हज़रत में आपके हाथ पर तौबा करता हुं। अब मैं इस किस्से में कुछ न बोलुंगा। (अरवाहे सलासा–पेज–262) अब अकीदे की बर्बादी इस वाकिए पर देव बन्दी मज़हब के पेशवा मौलवी अशरफ

अली साहब थानवी के हाशिये से ज़ाहिर होता है। मुलाहेजा कीजिए और देवबन्दीयों के इस अकीदे पर दिल खोलकर आंसू बहाइये। मौलाना थानवी साहब इस वाकिए कि तस्दीक करते हुए लिखते हैं– "यह वाकिया रूह का तमस्सुल (किसी का जैसा होना) हैं और इसकी दो ही सूरतें हो सकती हैं। एक यह कि– जस्द (जिस्म) मिसाली था। मगर मुशाबेह जस्दे उन्सरी (हकीकी जिस्म जैसा) के। दूसरी सूरत यह कि रूह ने खुद अनासीर में तसर्रूफ करके जस्दे उन्सरी तैयार कर लिया। "(अरवाहे सलासा–पेज–262) वाकई इस किस्से पर क्या कहा जाए? नानोतवी साहब को कब्र मे पता चल रहा हे कि दारूल उलूम में मौलवियों के बीच झगड़ा हो गया है। वह यह भी जान गये कि महमूद साहब का दिल एक फ़रीक की तरह मायल हो गया। वह कब्र पर से मनो मिट्टी हटाकर बाहर भी तशरीफ ले आए। वह भी हकीकी जिस्म के साथ और बजाए अपने घर वालों के पास जाने या जो मौलवी आपस में झगड़े थे उनके पास जाकर उनमें सुल्ह कराने के सिर्फ इतना किया कि रफीउद्दीन साहब को हैरान करके यह कहां कि मौलाना मेहमूद इस झगड़ें मे न पड़ें। क्या यह अच्छा न होता कि वह उन मौलवियों के झगड़े को ही खत्म करा जाते?अल्लाह की शान कि उन्हें कब्र ही में नये कपड़े–जूते वगैराह भी मिल गये और नहाने को पानी भी इसलिए कि हज़रत इनके बिना तो दारूल उलूम नहीं जाते।

रूयते इलाही (अल्लाह का दीदार)

मौलवी अशरफ अली साहब थानवी से जब पूछा गया कि अल्लाह का दीदार इस दुनिया में मुमकिन है या नहीं? फरमाया– मुमकिन है। आयत "ला तदरका अल अबसार व हुवा यदरुकु अल अबसार" के यह मआनी है– इस बसारते ज़ाहिरी (इन आंखों) से अल्लाह का दीदार मुमकिन नहीं मगर जब नज़र बसीरत (बातिनी) हासिल कर लेती है तो ज़ाहिरी नज़र पर वह गालिब आ जाती है। पस! आरिफ़ हक़ीक़त में

नज़रे बसीरत से देखता है।'' (शमाइमे इमदादिया–पेज–48) इस बारे में जब नबी सल्ल. से सवाल किया गया कि क्या आपने अल्लाह को देखा है?तो आपने फरमाया– वह तो नूर है उसे कैसे देख सकता हूँ। इसी तरह जब मूसा अलैहि.ने जब अल्लाह से कहा कि ''मैं तुझे देखना चाहता हूँ तो अल्लाह ने कहा ''लन तरानी'' तू मुझे नहीं देख सकता।'' सोचिए! क्या मूसा अलैहि. और नबी सल्ल. को नज़रे बसीरत हासिल न थी?

तसव्वुरे शैख

अरवाहे सलासा में है– एक दफा हज़रत रशीद अहमद गंगोही साहब जोश में थे और तसव्वुरे शैख का मसंअला दरपेश था। फरमाया – कह दूं। अर्ज किया गया फरमाइये तो फरमाया–''पूरे तीन साल हज़रत इमदाद का चेहरा मेरे दिल में रहा ओर मैंने उनसे पूछे बिना कोई काम नहीं किया। फिर ओर जोश आया। फरमाया कह दू। अर्ज किया गया हज़रत ज़रूर कहिये। कहा– इतने ही साल आं हज़रत सल्ल. मेरे दिल में रहै और मैंने कोई बात आपसे पूछे बिना नहीं की। यह कह कर और जौश आया। फरमाया कह दूं। अर्ज किया गया कहिए। मगर खामोश हो गये। लोगों ने इसरार किया तो कहा बस रहने दो। अगले दिन बहुत से इसरारों के बाद फरमाया कि भाई फिर एहसान (अल्लाह) का मर्तबा रहा।'' (अरवाहे सलासा–पेज–308) अशरफ अली थानवी साहब इसपर यूं तबसेरा करते है– ''सूरत का हाजिर रहना ओर उससे से सलाह लेना यह अक्सर तो तहलील (कलमा तय्यबा) की ताकत है और कभी खरके आदत (मिजाज़ के खिलाफ) रूह का तमस्सुल (किसी की तरह होना) बशक्ले जसद हो जाता है।'' दोनों हालतों में लज़ूम (जरूरी) व दवाम (हमेशा) नहीं।''जब बरेलवियों ने इस बात पर ऐतराज़ किया कि फिर मआज़ अल्लाह अल्लाह का चेहरा दिल मे रहा? उसका जवाब इस तरह दिया। ''किस कदर जाहिलाना बात है। अगर आदमी जाहिले मुतलक न हो तो इसमे मआज़ अल्लाह की क्या बात है? क्या मआज

अल्लाह अल्लाह का चेहरा उस आदमी के नज़दीक शैतान का चेहरा है। जिसे मोमिन के दिल में नहीं होना चाहिए।'' (बरेलवी फित्ने का नया रूप–पेज–165) अशरफ अली थानवी साहब लिखते है– कि गंगोही साहब फरमाते है कि मेरा हाजी साहब के साथ बरसों यह तअल्लुक रहा कि बगैर आपके मशवरे के मेरी निशस्त व बरखास्त (साथ उठना–बैठना) नहीं हुई। हालांकि हाजी साहब मक्का मे थे ओर उसके बाद जनाब रसूल सल्ल. के साथ बरसों तअल्लुक रहा है।'' (इमदादुल मुश्ताक–पेज–199 बहवाला तज़किरतुर्रशीद–पेज–194)

नूरे मोहम्मदी

अशरफ अली साहब थानवी नबी सल्ल. की पैदाइश के बारे में हज़रत जाबिर रजि. से रिवायत लाए है– ऐ जाबिर रजि.अल्लाह तआला ने सब चीज़ों से पहले तेरे नबी का नूर बनाया। वह नूरे इलाही का मादा न था बल्कि अपने नूर के फ़ेज़ से पैदा किया। फिर वह नूर अल्लाह की कुदरत से जहां अल्लाह ने चाहा सैर करता रहा। उस वक्त न लौह थी न कलम था, न जन्नत थी न दोज़ख, न फरिश्ते, न आसमान, न ज़मीन, सूरज व चांद और न जिन्न व इन्सान। फिर जब अल्लाह ने ओर मखलूक को पैदा करना चाहा तो उस नूर के चार हिस्से किये ओर एक हिस्से से कलम पैदा किया।दूसरे से लौह और तीसरे से अर्श।'' इस हदीस से नूरे मुहम्मदी का सबसे पहले पैदा होंना साबित हुआ। इस तरह हज़रत अली रज़ि.से रिवायत करते है– ''नबी सल्ल ने फरमाया कि मैं आदम अलैहि0 के पैदा होने तक चौदह हज़ार साल पहले अल्लाह के हुजूर में एक नूर था।'' (नशर अल तय्यब--पेज–5–6) मौजूअ (मनघड़त) रिवायत जिक्र करके नबी सल्ल0 को बशर की बजाए नूर साबित करना कहां कि अकलमन्दी है? लीजिए आप सल्ल. के फ़ज़ाइल में थानवी साहब एक मौज़ूअ रिवायत बयान करते है– आदम अलैहि0 ने मुहम्मद सल्ल. का नामे मुबाराक अर्श पर लिखा देखा और अल्लाह ने आदम अलैहि. से

फरमाया कि अगर मोहम्मद (सल्ल0) न होते तो मैं तुम्को पैदा न करता।" (नशर अल तय्यब–पेज–9) अशरफ अली साहब थानवी एक और रिवायत जिक्र करते हैं– जब आदम अलैहि0 से खता हो गई तो उन्होने अल्लाह तआल से अर्ज किया कि ऐ हमारे रब! मैं आप से मुहम्मद सल्ल0 के वास्ते से दरख्वास्त करता हूं कि हमें माफ करदे। तो अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया– ऐ आदम! तुमने मुहम्म्द सल्ल0 को कैसा पहचाना? तो आदम अलैहि0 ने कहा– ऐ अल्लाह! जब तूने मुझमे रूह फूंकी तो मैंने अर्श के पायों पर लिखा देखा। 'ला इलाहा इल्ललाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' तो मैं समझ गया कि मुहम्मद (सल्ल.) आपको मखलूक में सबसे ज्यादा प्यारा है। अल्लाह तआल ने फरमाया कि– जब तूने उनके वास्ते से मुझसे दरख्वास्त की है तो मैने तुम्हे बख्श दिया।" (नशर अल तय्यब–पेज–9) थानवी साहब ने एक और रिवायत जिक्र की– आदम अलैहि0 ने जब हव्वा अलैहि. के करीब होना चाहा तो उन्होने मेहर माँगा। आदम अलैहि. ने दुआ की – ऐ रब मैं इन्हें मेहर में क्या दूँ? इर्शाद हुआ! मेरे हबीब मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर बीस दफा दुरूद भेजो। चुनांचे उन्होने ऐसा ही किया।" (नशर अल तय्यब–पेज–10)

ला इलाहा इल्लल्लाह अशरफ अली रसूलुल्लाह

थानवी साहब का एक मुरीद लिखता है कि– मैं ख्वाब देखता हूँ कि कलमा शरीफ ला इलाहा इल्ललल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ता हूँ। लेकिन मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की जगह हुजूर (अशरफ अली) का नाम लेता हूँ। इतने में दिल में ख्याल पैदा हुआ कि मुझसे गलती हुई कलमा शरीफ पढ़ने में, उसे सही पढ़ना चाहिए। इस ख्याल से दुबारा कलमा शरीफ पढ़ता हूं। दिल में तो यह है कि सही पढ़ा जाए लेकिन जुबान से बे साख्ता बजाए मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के अशरफ अली निकल जाता है। हालांकि मुझे इस बात का इल्म है कि इस तरह कहना ठीक नहीं। लेकिन बेइख्तियार जुबान से यही कलमा निकलता है। दो–तीन दफा

जब ऐसा ही हुआ तो हुजूर को अपने सामने देखता हूं ओर यही कुछ लोग हुजूर के पास थे। लेकिन इतने में मेरी यह हालत हो गई कि मैं खड़ा–खड़ा लरजने लगा और ज़मीन पर गिर गया। मैने निहायत ज़ोर से एक चीख मारी। मुझे ऐसा लगता था कि मेरे अन्दर ताकत नहीं रही।इतने मे मैं ख्वाब से जग गया। लेकिन बदन में बदस्तूर बेहिसी थी। ओर कमज़ोरी बाकी थी। लेकिन हालते ख्वाब ओर जागते में हुजूर थानवी साहब का ही ख्याल था। जागने पर जब कलमा शरीफ गलत पढ़ना याद आया तो इस बात का इरादा किया कि इस सोच को दिल से निकाला जाए। इसलिए कि फिर ऐसी गलती न हो। मैं बैठ गया फिर दूसरी करवट लेकर कलमा शरीफ की गलती सुधारने के लिए रसूल सल्ल. पर दुरूद पढ़ने लगता हूं मगर फिर भी यह कहता हूं 'अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदना व नबीयना मौलाना अशरफ अली। हालांकि अब जागा हुआ हूं। ख्वाब नहीं है लेकिन बे–इख्तियार ओर मजबूर हूं। जुबान मेरे बस में नहीं। उस रोज़ कुछ ऐसा ही ख्याल दिल में रहा। दूसरे दिन जागने पर खूब रोया। इसके अलावा और भी बहुत सी वजुहात है जो हुजूर के साथ मुहब्बत का सबब है। कहां तक अर्ज करूं? (रिसाला अल इमदाद–पेज–35) इस पर अशरफ अली साहब थानवी बजाए अपने मुरीद से यह कहे कि यह ख्याल अपने दिल से झटक दो और अल्लाह से तौबा करों। उसे यह तसल्ली बख्श जवाब देते है–इस वाकिए में तसल्ली थी कि जिस की तरफ तुम रूजूअ करते हो वह अल्लाह की मेहरबानी से सुन्नत का पाबन्द है। (रिसाला अल इमदाद–पेज–35 – 24 शव्वाल–1335 हिजरी)

बैअत और ज़ियारते रसूल सल्ल.

हाजी इमदादुल्लाह साहब फरमाते है– मेरी बैअत बातिन (अन्दरूनी/भीतरी) बिला वास्ता खुद अल्लाह के रसूल सल्ल. से इस तरह हुई कि मैंने देखा कि हुजूर सल्ल. एक ऊंची जगह पर बैठे है और सय्यद अहमद शहीद का हाथ आपके मुबारक हाथ में है और में भी उसी

मकान में अदब की वजह से दूर खड़ा हूं। हज़रत सय्यद साहब ने मेरा हाथ पकड़ कर हुजूर (सल्ल.) के हाथ में दे दिया। अल्लाह ने मुझे कुछ ओर भी दिखाया है। अगर ज़ाहिर कर दूं तो तुम लोग कुछ का कुछ कहोगे। (फिर वह हालत मुझ से अकेले में बयान की) (शमाइमे इमदादिया–पेज–108) हाजी इमदादुल्लाह साहब ही फरमाते हैं कि– मौलवी कलन्दर साहब को हर रोज़ ज़ियारत रसूल (सल्ल0) होती थी। एक दिन किसी जमाल के लड़के को कि सय्यद था तमांचा मार दिया। बस उसी दिन से ज़ियारते रसूल सल्ल. का सिलसिला टूट गया। मदीना मुनव्वरा के मशायख से रूजूअ किया। उन्होने एक मजजूब (दीवानी) वलीया के हवाले फरमाया–जब वह औरत मस्जिदे नबवी में आई और मौलाना ने उससे अर्ज किया तो सुनते ही जोश में आ गई और मौलाना का हाथ पकड़कर कहा– देख यह है अल्लाह के रसूल सल्ल. बस (मौलाना ने) जागते में अपनी इन्हीं आंखों से रसूल सल्ल. की ज़ियारत की। इससे पहले उस लड़के से भी अपनी गलती माफ कराई थी। मगर कुछ फायदा न हुआ।'' (शमाइमे इमदादिया–पेज–75) एक वाकिआ ओर देखिए– ''एक जगह कासिम नानोतवी साहब से शियाओं ने कहा कि अगर आप जागते में हमें रसूल सल्ल0 की ज़ियारत करा दे और हुजूर सल्ल. अपनी जुबान से इर्शाद फरमा दे कि आप सच कह रहें हैं तो हम 'अहले सुन्नत वल जमाअत' में शामिल हो जाएगें। नानोतवी साहब ने फरमाया कि तुम सब इस बात पर पक्के रहो तो मैं जागते में ज़ियारत कराने के लिए तेयार हूँ। मगर शिया हज़रात कुछ कच्चे हो गये।'' अशरफ अली साहब थानवी इस पर यूं तबसिरा करते हैं– '' या तो ऐसा करने पर कुदरत होगी या 'लो अकसम अलल्लाह ला बर्राह' (जो अल्लाह के लिए कसम खाले उसकी बात रद्द नहीं होती) हदीस पर भरोसा होगा।'' (अरवाहे सलासा–पेज–284)

साहिबे परवाज़

तज़किरतुर्रशीद के मुसन्निफ़ अपनी खुश दामन (सास) की

ज़ुबानी बयान करते है कि– बेटा हज़रत (गंगोही) के बहुत शागिर्द ओर मुरीद है। मगर किसी ने हज़रत को नहीं पहचाना। जिन दिनों मक्का मुअज़्जमा में थी। रोज़ाना मैंने सुबह (फज्र) की नमाज़ हज़रत को हरम शरीफ में पढ़ते देखा और लोगों से सुना भी कि यह मौलाना रशीद अहमद गंगोही है। गंगोह (सहारनपुर के पास गांव) से तशरीफ लाते है। ''(तज़किरतुर्रशीद जिल्द–2 पेज–212) अल्लाह के रसूल सल्ल. तो मक्का छोड़ते वक्त हसरत भरे लहज़े मे कहते हैं कि ऐ काबा मुझे तुझ से बहुत मुहब्बत है। लेकिन क्या करूं तेरे शहर वाले मुझे यहां रहने नहीं देते। आप मदीना से मक्का नहीं आ सकते थे मगर गंगोही साहब के क्या कहने कि रोज़ाना वह हिन्दुस्तान से मक्का पहुंच जाते थे।

इत्तेबाअ रशीद अहमद गंगोही

मौलवी आशिक इलाही मेरठी लिखते हैं कि– बारहा आपको अपनी जुबान फैजे तरजुमान से यह कहते सुना गया है ''सुन लो हक़ वही है जो रशीद अहमद की ज़बान से निकलता है और यह कसम (से) कहता हूं कि मैं कुछ नहीं हू। मगर इस ज़माने में हिदायत व निजात मोकूफ है मेरी इत्तेबाअ पर।'' (तज़किरतुर्रशीद–जिल्द–पेज–17) अल्लाह ने सिर्फ नबी सल्ल. की ज़मानत दी कि ''वह अपनी मर्जी से कुछ नहीं कहते। वोह कहते है जो उनकी तरफ वहय की जाती है।'' (नज्म–आयत–34) आप सल्ल. ने फरमाया – मेरी ज़बान से सिर्फ हक़ ही निकलता है। अल्लाह फरमाता है ''हक़ तेरे रब की तरफ से है'' और गंगोही साहब हक़ को अपनी तरफ मन्सूब करते है। आप सल्ल. फरमाए– मेरा रास्ता सीधा रास्ता है। बस उसी की पैरवी करो, दूसरे रास्तों की पैरवी न करों।'' (अनआम–आयत–153) इसलिए कि इर्शादे बारी तआला है ''ए नबी (सल्ल.) कह दीजिए ''अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा।'' (आले इमरान–आयत–31) रसूल सल्ल. ने फरमाया ''जिस ने मेरी

इताअत की। वह जंन्नत में दाखिल होगा और जिसने मेरी नाफरमानी की गोया उसने (जन्नत में जाने से) इन्कार किया।" (बुखारी–7280)

तौहीने नबी सल्ल.

देवबन्दी मसलक के बानी क़ासिम नानोतवी साहब फरमाते है "अम्बिया अपनी उम्मत से अगर मुमताज (अफ़ज़ल) होते हैं तो उलूम ही में मुमताज़ होते हैं। बाकी रहा अमल तो उसमे बिसा औकात (कभी) ज़ाहिर में उम्मती बराबर हो जाते है।" (तहज़ीरुल्नास–पेज–5) एक जगह नानोतवी साहब इस तरह समझाते है– "अगर मान लो कि नबी सल्ल. के ज़माने के बाद कोई नबी पैदा हो तो फिर भी मुहम्मद सल्ल. के आखिरी नबी होने में कृछ फ़र्क नहीं आयेगा। (तहज़ीरुल्नास–पेज–25) याद रहे– जमाअते अहमदिया (कादयानी) ख़ातिमुन्नबीयीन के मअनी की तशरीह में इसी मसलक पर कायम हैं।

अंम्बिया की रूहों से मुलाकात

तज़किरतुर्रशीद के मुसन्निफ लिखते हैं– "एक शख्स खत के ज़रिये आप (गंगोही साहब) से बैत हुए और तहरीरी तालिम पर ज़िक्र में मशगूल हो गए। कुछ दिनों बाद उन पर ऐसी हालत तारी हुई कि औलिया ए सलासिल की पाक रूहो से मुलाकात हो गई। फिर एक के बाद दूसरे अम्बिया अलैहि0 की पाक रूहो से मुलाकात हुई। धीरे–धीरे ऐसा महसूस करने लगे कि सर से लेकर पैर तक रग–रग में पाक रूहो से वाबस्तगी (जुड़ाव) है। उसी हालत में एक मदहोशी और सुकर (मस्ती) की हालत पैदा होती है कि गैब खुल जाते हैं और नबी सल्ल0 की मजलिस में दरबानी का शर्फ हासिल होता है।" (तज़किरतुर्रशीद–जिल्द–2 पेज–143)

कुछ अलमुहन्नद अलल मुफन्नद यानि अक़ाइद उलैमा ए देवबन्द से

अहमद रज़ा खान साहब ने मक्का शरीफ में देवबन्दियों के बारे में कुछ अकाइद मन्सूब करके उनके खिलाफ फ़तवा हासिल किया। जब देवबन्दियों को यह मालूम हुआ तो उन्होने उन अकीदों से बराअत (बेज़ारी) का इज़हार किया। यहां हम उलैमा ए हरमैन के सवालात और उनके जवाबात जिक्र करते हैं–

पहला और दूसरा सवाल– क्या फरमाते हो इस बारे में आप सल्ल. की ज़ियारत के लिए सफर करने वाले केलिए तुम्हारे नज़दीक और तुम्हारे अकाबिर के नजदीक इन दो बातों में कौनसी बात पसन्दीदा और अफ़ज़ल है कि ज़ियारत को जाने वाला सफर शुरू करते वक्त खुद आप सल्ल. की (कब्र की) ज़ियारत की नीयत करें या मस्जिदे नबवी की भी? हालांकि वहाबिया का कहना है कि मदीना शरीफ के मुसाफिर को सिर्फ मस्जिदे नबवी सल्ल. की ज़ियारत की नीयत से सफर करना चाहिए।

जवाब– हमारे नज़दीक और हमारे मशायख के नज़दीक ज़ियारत कब्रे रसूल सल्ल. (हमारी जान आप पर कुर्बान) आला दर्जे की कुरबत, निहायत सवाब, और सबब हुसूले दर्जात है बल्कि वाजिब के करीब है। सफ़र के वक्त आपकी ज़ियारत की नीयत करें और साथ में मस्जिदे नबवी और दूसरे मकामात और बा बरकत ज़ियारत गाहों की भी नीयत करें। बल्कि बेहतर यह है कि जैसाकि इब्ने हमाम रह. ने फरमाया है– सिर्फ कब्र शरीफ की ज़ियारत की नीयत करें। फिर जब वहां हाजिर होगा तो मस्जिदे नबवी की भी ज़ियारत हो जाएगी। इस सूरत में आं हज़रत सलल. की ताज़ीम ज्यादा है ओर इसकी ताईद खुद आप सल्ल. के इस इर्शाद से हो रही है कि–"जो मेरी ज़ियारत को आया कि मेरी ज़ियारत के सिवा कोई हाजत उसको न थी। तो मुझ पर हक़ है कि कयामत के दिन उसकी शफाअत करूं।" ऐसा ही आरिफ मुल्ला जामी ने भी कहा कि उन्होने जियारत के लिए हज के अलावा सफर किया ओर यही तरीका आशिके रसूल के मज़हब से ज्यदा मिलता है।

अब रहा वहाबिया का यह कहना कि मदीना शरीफ का सफर करने वालों को सिर्फ मस्जिदे नबवी की (ज़ियारत की) नीयत करना चाहिए और इस

बात पर इस हदीस को दलील बनाना कि "कजावे न कसे जाए मगर तीन मस्जिदों के लिए" सो यह कौल मरदूद है इसलिए की हदीस कहीं भी मुमानियत पर दलालत नहीं करती बल्कि साहिबे फहम अगर गौर करें तो यही हदीस हमारी बात पर दलील बनती है। क्योंकि जो वजह इन मसाजिद की दूसरी मसाजिद और मकामात से अलग होने की करार पाती है, वह इन मसाजिद की फ़जीलत ही तो है और यह फ़जीलत ज्यादती के साथ आप सल्ल. की कब्र शरीफ में मोजूद है। इसलिए कि "वह हिस्सा ए ज़मीन जो आप सल्ल0 के आज़ा–ए मुबारका को मसह किए हुए है, अलल इतलाक अफ़ज़ल है। यहां तक की काबा, अर्श और कुर्सी से भी अफ़ज़ल है। चुनांचे फुक्हा ने इसकी तशरीह की है और जब खास फ़जीलत की वजह से ये तीन मसाजिद बाकी से अलग हो गई तो यह ज्यादा मुमकिन है कि रोज़ा (बक़आ) ए मुबारका फ़ज़ीलते आम्मा की वजह से अलग हो।" (पेज–212 से 219)

तीसरा और चौथा सवाल– क्या वफात के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल. का वसीला पकड़ना दुआओं में जाइज़ है या नहीं? तुम्हारे नज़दीक सल्फ सालेहीन यानि अम्बिया, सिद्दीकीन शुहदा और औलिया अल्लाह का वसीला लेना भी जाइज़ है या नाजाइज़?

जवाब– हमारे नज़दीक और हमारे मशायख के नज़दीक दुआओं में अम्बिया, सुलहा, शुहदा और सिद्दीकीन का वसीला लेना जाइज़ है। उनकी ज़िन्दगी में या वफात के बाद इस तरह कहे – या अल्लाह में फलां बुजुर्ग के वसीले से तुझसे दुआ की कुबूलियत और हाजत रवाई चाहता हूँ। इसी जैसे और कलमात कहें। (पेज–220)

पांचवा सवाल–क्या फरमाते हो जनाब रसूल सल्ल. की कब्र की ज़िन्दगी के बारे में कि कोई खास जिन्दगी आपको हासिल है या आम मुसलमानों की तरह बरज़खी ज़िन्दगी है?

जवाब– हमारे नज़दीक और हमारे मशायख के नज़दीक हज़रत सल्ल. अपनी कब्रे मुबारका में ज़िन्दा है और आपकी जिन्दगी दुनिया की

सी है और यह ज़िन्दगी खास है। आं हज़रत सल्ल. और शुहदा के साथ। यह ज़िन्दगी बरज़खी नहीं है जो हासिल है तमाम मुसलमानों बलिक सब लोगों को। अल्लामा सुयुती रह. ने अपने रिसाले "अम्बिया अल अज़किया बहयातुल अम्बिया" में ब तसरीह (सराहत के साथ) लिखा है कि अल्लामा तक़ीउद्दीन सुबकी ने फरमाया "अम्बिया व शुहदा" की जिन्दगी कब्र में ऐसी है जेसी दुनिया में थी और मूसा अलैहि. का अपनी कब्र में नमाज़ पढ़ना इस बात की दलील है क्योंकि नमाज़ जिन्दा दिल को चाहती है।" पस! इससे साबित हुआ कि हज़रत सल्ल. का अपनी कब्र में नमाज़ पढ़ना इस बात की दलील है। बस! साबित हुआ कि आप सल्ल. की जिन्दगी दुनियावी है और इस मआने में बरज़खी भी है कि आलमे बरज़खमें हासिल है। (पेज–221)

छटा सवाल– क्या यह जाइज़ है कि मस्जिदे नबवी में दुआ करने वाला कब्र शरीफ की तरफ मुंह करके खड़ा हो और आप सल्ल. का वास्ता देकर अल्लाह से दुआ मांगे?

जवाब– बहतर यही है कि ज़ियारत के वक्त कब्र शरीफ की तरफ मुंह करके खड़ा होना चाहिए। यही हमारे नज़दीक मोअतबर है और इसी पर हमारा और हमारे मशायख का अमल है और यही हुक्म दुआ मांगने का है। (पेज–223)

आठवा, नवां और दसवा सवाल– तमाम उसूल और फुरूअ (मसाइल) में चारों इमामों मे से किसी एक इमाम का मुकल्लिद बन जाना सही है या नहीं?अगर सही है तो मुस्तहिब है या वाजिब?तुम किस इमाम के मुकल्लिद हो?

जवाब– इस ज़माने में निहायत ज़रूरी है कि चारों इमामों में से किसी एक की तकलीद की जाए बल्कि वाजिब है। क्योंकि हमने तजुरबा किया है कि अइम्मा की तकलीद छोड़ने और अपने नफ्स व हवा की पैरवी का अन्जाम अल्हाद और ज़िन्दका (कुफ्र) के गढ़े में गिर जाना है। अल्लाह पनाह में रखें ओर हम और हमारे मशायख तमाम उसूल व

फुरूअ (मसाइल) में इमामुल मुस्लिमीन अबु हनीफा रजि. के मुकल्लिद है। अल्लाह करे इसी पर हमारी मौत हो और उसी जुमरे में हमारा हश्र हो। इस बारे में हमारे मशायख की बहतरीन तसानीफ़ दुनिया में छप कर शाया हो चुकी है। (पेज–225–226)

ग्यारहां सवाल– क्या सूफिया के तरीके में मशगूल रहना और उनसे बैअत होना तुम्हारे नज़दीक जाइज़ और अकाबिर के सीने और कब्र के बातिनी फैजान पहुंचने के तुम कायल हो या नहीं?मशायख की रूहानियत से अहले सुलूक को नफा पहंचता है या नहीं?

जवाब– हमारे नज़दीक पसन्दीदा है कि इंसान जब अकाइद को दुरूस्त करले और शरअ के जरूरी मसाइल का इल्म हासिल करले तो ऐसे शख्स से बेअत हो जो शरीयत के इल्म में माहिर हो, दुनिया से बे परवाह हो, आखिरत का तालिब हो और नफ्स की घाटियों को तय कर चुका हो। अब रहा मशायख की रूहानियत से फायदा उठाना और उनके सीनों व कब्रों से बातिनी फ़ुयुज़ पहुंचना सो बेशक सही है। मगर उस तरीके से जो इसके अहल और ख्वास को मालूम है। न कि उस तरीके से जो अवाम में राइज है। (सफा–226–227)

बारहवां सवाल– मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी हलाल समझता था मुसलमानों के खून, माल और उनकी आबरू को और तमाम लोगों को मन्सूब करता था। शिर्क की जानिब। सलफ़ की शान में गुस्ताखी भी करता था। उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है? क्या सलफ़ और अहले किबला की तक्फीर को तुम जाइज़ समझते हो?

जवाब– हमारे नज़दीक उनका हुक्म वही है जो साहिबे दुर्रेमुख्तार ने फरमाया है और रव्वारिज एक गिरौह है जिन्होने इमाम पर चढ़ाई की थी। तावील से कि इमाम (अली रजि.) को बातिल यानि कुफ्र या ऐसे गुनाह का करने वाला समझते थे जो किताल को वाजिब करती है। इस तावील से यह लोग हमारी जान व माल को हलाल समझते और हमारी औरतों को कैदी बनाते है। उनका हुक्म बागियों का है। हम उन्हें सिर्फ

काफिर इसलिए नहीं कहते कि यह फैअल तावील से है अगरचे गलत ही सही। अल्लामा शामी ने इसके हाशिये पर फरमाया है– जैसा कि हमारे ज़माने में अब्दुलवहाब की पैरवी करने वालों से सरज़द हुआ कि नजद से निकलकर हरमैन शरीफैन पर गालिब आए। अपने को हम्बली मज़हब का बताते थे। मगर उनका अकीदा यह था कि बस वही मुसलमान है और जो उनके अकीदे के खिलाफ हो वह मुश्रिक है। इसी बिना पर उन्होने अहले सुन्नत और उलैमा अहले सुन्नत का कत्ल मुबाह (जाइज़) समझ रखा था। यहां तक की अल्लाह ने उनकी शौकत तक तौड़ दी। इसके बाद मैं कहता हूं कि अब्दुल वहाब और उसका ताबेअ कोई शख्स भी हमारे किसी सिलसिला ए मशायख मैं नहीं। न तफसीर, फिक्ह व हदीस के इल्मी सिलसिले में और न तसव्वुफ में। अब रहा मुसलमानों की जान व माल ओर आबरू का हलाल समझना सो यह नाहक़ होगा या हक़। फिर अगर नाहक है तो या बिना ताविल के होगा जो कुफ्र है जो शरअन जाइज़ नही तो गुनाह है और अगर ब–हक हो तो जाइज़ बल्कि जाइज़ है। बाकी रहा सलफ़ अहले इस्लाम को काफिर कहना तो अल्लाह की पनाह। जो हम किसी को काफिर कहते या समझते हों। बल्कि यह बात हमारे नज़दीक रफ़द (छोड़ना, अलग होना) और दीन में दखल अंदाजी है। हम तो उन बिदअतियों को भी जो अहले किब्ला है (वह) जब तक दीन के किसी ज़रूरी हुक्म का इन्कार न करें, काफिर नहीं कहते। हां जिस वक्त दीन के किसी ज़रूरी हुक्म का इन्कार साबित हो जाएगा तो फिर काफिर समझेगे और अहतियात करेंगे। यही तरीका हमारा और हमारे सभी मशायख रह. का है। (सफा–228–229)

तैरहवां और चौदहवा सवाल– क्या कहते हो अल्लाह तआला के इस तरह के इर्शाद में कि "रहमान अर्श पर मुस्तवी हुआ" और क्या जाइज समझते हो अल्लाह के लिए जहत व मकान (दिशा व जगह) का साबित करना या क्या राय है?

जवाब– इस किस्म की आयतों में हमारा मज़हब यह है कि उन पर ईमान लाते है और कैफियत से बहस नहीं करते। यकीन रखते है कि

अल्लाह तआला मखलूक के औसाफ (गुणों) से अलग और खामियों और कमज़ोरियों से पाक है। जेसा कि हमारे पेशवाओं कि राय है और हमारे आने वाले अइम्मा ने इन आयतों में जो सही ओर लुगत व शरअ के ऐतेबार से जाइज़ तावीलें की हैं ताकि हम समझ लें। मसलन यह कि मुमकिन है 'इस्तवा' से मुराद गलबा हो ओर हाथ से मुराद कुदरत हो तो यह भी हमारे नज़दीक हक़ है। अलबत्ता जहत व मकान का अल्लाह के लिए साबित करना हम जाइज़ नही समझते बल्कि यू कहते हैं कि वह जहत व मकानीयत और तमाम अलामात हुदुस (किसी चीज़ का नया पैदा होना)से मुनज्जा (पाक, अलग) व आला है। (सफा–230–231)

अठारवां सवाल– क्या तुम इसके कायल हो कि नबी सलल. को सिर्फ शरई अहकाम का इल्म है या आपको अल्लाह तआला की ज़ात, सिफ़ात व आफ़अल और खुफिया राज़ और हिक्मते इलाही के इस कदर उलूम अता हुए है, जिनके पास तक मखलूक में से कोई नहीं पहुंच सकता?

जवाब– हम ज़बान से कायल और दिल से मुअतकिद इस बात के है कि आप सल्ल. को सब मखलूकात से ज्यादा उलूम अता हुए है। जिनको ज़ात व सिफात और तशरियात यानि अमली अहकाम व हुक्मे नज़रिया, अल्लाह तआला की हकीकत और इसरारे मखफिया (गैबीयत) से ताल्लुक है कि मखलूक में से कोई भी उनके पास तक नहीं पहंच सकता। न करीबी फरिश्ता और न नबी व रसूल और बेशक आपको अव्वलीन और आखिरीन का इल्म अता हुआ। (सफा–237–238)